किताब मे तुम हो

— राहुल रूद्र "राही"

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Rahul Rudra "Rahii" 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7825-504-5

Cover design: Anuj
Typesetting: Simran

First Edition: July 2026

"इस किताब को जीने की ज़िद मत करना,
इसमें एक शख़्स को खोने का हुनर लिखा है।"
— राहुल रुद्र "राही"

Dedication (समर्पण)

उसके नाम—
जिसने मुझे चाहा नहीं,
पर मुझे मोहब्बत सिखा दिया।
जिसने साथ नहीं दिया,
पर मुझे "राही" बना दिया।

Preface (प्रस्तावना)

"किताब में तुम हो"
कोई शिकायत नहीं है,
कोई इल्ज़ाम नहीं है।

ये एक ऐसी मोहब्बत की किताब है—
जो अधूरा होकर भी मुकम्मल है।

यहाँ कोई बदनामी नहीं,
कोई गिला नहीं,
सिर्फ एहसास है...
जो एक शख़्स से शुरू होकर
खुद तक पहुँचते है।

अगर आपने कभी किसी को बिना पाए चाहा है,
तो ये किताब आपको समझेगी।

Author’s Note

ये मोहब्बत अधूरी है—पर झूठी नहीं है।

हाँ! बहुत ख़ामोश रह कर तुमको चाहा है मैंने,
अपने ही अंदर एक शब-ए-हिज्र को पाला है मैंने।
तुम जो कहती हो कि 'राही' भूल जाओ मुझे,
लो आज अपनी ही नज़्मों में तुम्हें आख़िरी बार पुकारा है मैंने।

अब जब ये सफ़्हे छप कर तुम्हारे हाथों में हों, तो बस इतना जान लेना... कि इस किताब के हर हर्फ़ में सिर्फ़ तुम हो, और अब मेरा होना या न होना, कोई मायने नहीं रखता।

— राहुल रुद्र "राही"

अनुक्रमाणिका

किताब में तुम हो 1
हुस्न-ए-यार 2
वस्ल-ए-मंज़र 3
लटें 5
उम्र 6
मेरा खुदा 7
दिवाली दिलवाली 8
जादू-ए-अक्स 9
मुकम्मल हुआ इंतज़ार 10
चेहरा 11
सोलह श्रृंगार 12
तुम मासूम नहीं 13
हुस्न-ए-आख़िर 14
चाहत और चाय 15
मर्मर सा शख़्स 16
जूठे अधर 17
जन्मदिन 18
इस होली 19
उसकी आँखों में 20
उसकी निगाहें 21
बेदाग चांद 22
तेरी तस्वीर से जाना 23

मोहब्बत हमारी 24
मोहब्बत 26
समझ 27
सफ़र 29
माह-ए-फरवरी 30
हर महीने के सात दिन 31
हसरत 33
ठंड 34
दुआ-ए-बहाराँ 35
चाय पे आना 36
समझता हूं 37
सच्चा साथी 38
ख्याल 40
ख़्वाब 41
अधूरा सा मैं 42
गले लगाओ मुझे 43
उसके ख़ातिर 44
खबर सुनी है 45
उल्फ़त-ए-शाम 46
छोर दे 47
छोटा बेटा 48
जिस्म-परस्ती 49
अखबार होना पड़ा 50
आरज़ू नहीं रही 51
जिस्म-परस्ती 52
बे-तकल्लुफ़ 53

मोहब्बत की सज़ा 54
तारीख़ बदल गई 55
अंज़ाम 56
मोहब्बत से डर गया 57
मुहब्बत तमाम 58
मुसाफ़िर 59
भूल जाने के लिए 60
शायर बताते हैं 61
तेरा ज़िक्र 62
आखिरी चाय 63
मुलाकात 64
मोहब्बत हुई। 65
मुहब्बत के मुक़ाम। 66
दम-ए-वापसी 67
किसी के लिए 68
गुजरने चला था 69
मोहब्बत के मसलें 70
करेगा नहीं कोई 71
किसे लिखूं 73
मै उनके, वो किसी और के 74
उसे "ना" कहना आता है 75
हज़ारों नज़्म 76
शिकस्त-ए-जनवरी 77
कोई कभी पूछे 78
अब याद नहीं करते। 80
राहगुजर नहीं था 81

अफसाना 82
मुद्दत गुजार दुं 83
दिल-ए-ख्वाहिश 84
तेरी खुशियाँ जाना। 85
उनके इज़हार को 86
बाकी है 87
छोड़ जाती थी 88
बैठे है 89
मंज़िल मिल आए 90
मोहब्बत का ऊसूल 91
बुरा होता है 92
जीना नहीं आता 93
ज़ख्म 94
इश्क का हिसाब 95
कुछ मील दूर 96
मेरे कलम में 98
इश्क़ किए जाऊंगा। 99
उठा के लाया हूँ 100
चाय के बहाने 101
हुनर अपना। 102
प्यार करूँगा 104
लबों पे कश 105
चले जाने दो 106
पायल मैं बनूँ। 107
पायल अता की हैं 110
सिलसिला 111

उम्र भर 112
बिना तुम्हारे 113
सवाल भी!!.. 114
मेरी जान.. 115
डरते है ख्याल.. 116
तेरे जाने के बाद 117
ज़िंदगी... 118
कमरा गवाह है 119
मुक़द्दर 121
वो जो सामने था, मगर जैसे नहीं था 122
सब कुछ लुटा बैठा। 123
रिहाई 124
मै उसे लिखता हूं.. 126
तेरा होना झूठ था.. 127
ताज्जुब.. 128
एक बात... 129
इस साल 130
अब के साल 131
एक सब्र के बाद.. 133
आशिकी भी नहीं की... 135
रस्ते से.. 136
मैं गुज़रता हूँ 137
"याना" तुम भूल जाना.. 138
आखिरी खत... 140

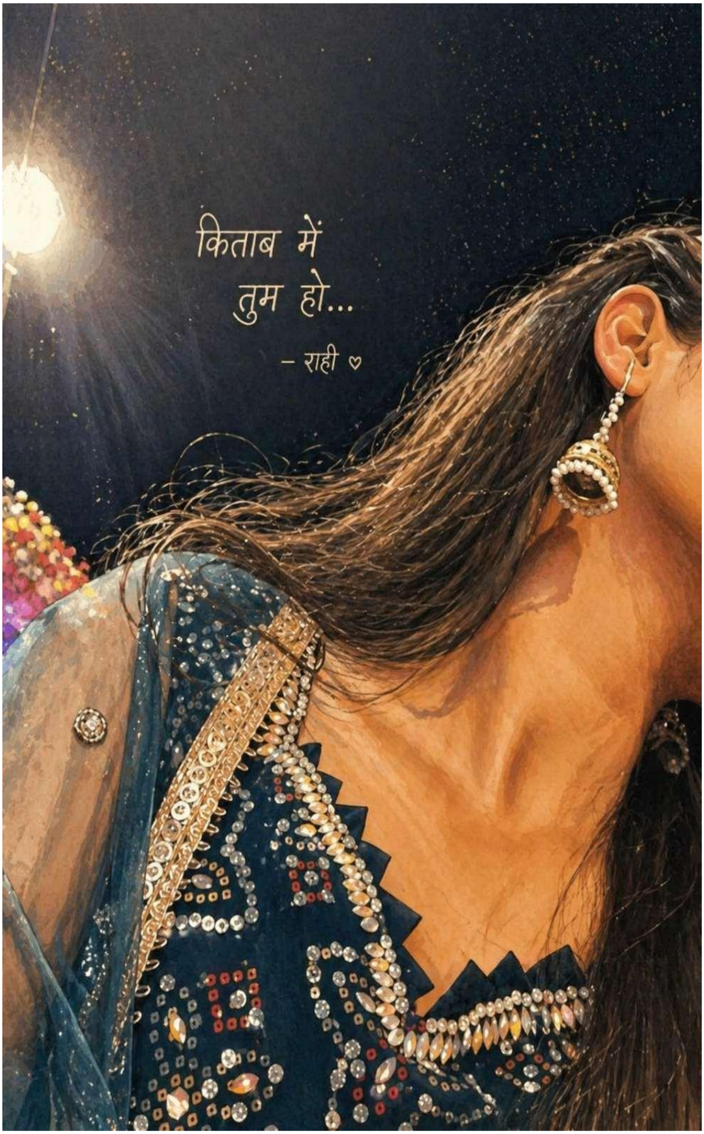
किताब में
तुम हो...
– राही ♡

किताब में तुम हो

ये कैसी किताब है, जिस किताब में सिर्फ तुम हो,
हर लफ़्ज़ में, हर नक्श में, हर नज़्म में तुम हो।।

तुम गुलाब हो, इत्र हो, या महज कोई खुशबू,
हर रंग में, हर रूप में, हर नकाब में तुम हो।।

तुम शाम हो, या हो कोई ज़िंदगी का सहर,
हर शौख में, हर शब में, हर शबाब में तुम हो।।

तुम धमक हो, जैसे तारे है फलक पर,
हर चांद में, हर फिज़ा में, हर आफताब में तुम हो।।

तुम शोर हो, या हो कोई खामोश सी बात,
हर पल में, हर ख्याल में, हर ख्वाब में तुम हो।।

तुम मंजिल हो, या हो राही का सफर,
हर कोशिश, हर जीत, हर जवाब में तुम हो।।

यहां हम है, वहां तुम हो, ये झलक का असर है,
हमारे दिल, दुनिया, हमारे हर रुआब में तुम हो।।

"राही" की किताब, जो तुम्हारी तहरीर करती है,
इस किताब को संभाले रखना, इस किताब में तुम हो।।

हुस्न-ए-यार

इस शाम फलक में इक चाँद की दमक सी है,
वो हर इक अदा में, किसी नाज़ुक झलक सी है।

पेशानी पर जो है सादगी की हँसी बिखरी,
उनके हर इक लट में इक अनोखी ख़लक सी है।

घटा सी ज़ुल्फ़ है, और लहर उसकी कमर तक,
उनकी हर इक लट में इक कोमल चमक सी है।

निगाह-ए-शौक़ को हाथ से जो छिपाना है,
उन भूरी आँखों में गहरी इक कसक सी है।

उनके वो नर्म भरे गाल, और होंठ गुलाबी से,
उनके हर इक तबस्सुम में इक मीठी महक सी है।

सुनहरे तार और वो उसके सब्ज़ रंग आँचल,
ये लिबास-ए-ज़रीं है, या कोई नई फ़लक सी है।

ये हुस्न-ए-बा-कमाल है या कोई कल की बात,
कि "राही" इस तस्वीर में सदियों की चमक सी है।

वस्ल-ए-मंज़र

हमारे वस्ल- ए- मंज़र में, वो छत पे आ गई,
ये देख, उल्फ़त-ए-इज़हार उमड़ने लगा।।

जनवरी भी मिजाजी हो गई, उनके इक दीदार से,
हमारे फासलों से, कोहरा जो छटने लगा।।

पल दो पल पहले ही, उनकी जुल्फें गीली थी,
पल दो पल में ही, वहां धूप निकलने लगा।।

वो दिखे हमें नीले कपड़ों में, खुश रंग आसमान तले,
फिर तो हमें, सफ़ेद आसमान भी नीला लगने लगा।।

इतने जुर्म के बाद भी, उन्होंने जुल्फें क्या बिखेर दीए,
नीले अम्बर पे, मौका-ए-परस्त बादल मचलने लगा।।

पढ़ने को, हम उनके आओ-भाव पढ़ ही रहे थे,
इतने में अनपढ़ दिल, उनके ऐहसास तक पढ़ने लगा।।

रूखसती का वहां आलम नहीं था, हमें बनाना परा,
उनकी चार दिवारी के बाहर, जमावड़ा जो लगने लगा।।

हिज़्र-ए-दौर में, वो हमे कुछ ऐसे दिखे, के
अब ख्वाबों में, वो शख़्स और बेहतर दिखने लगा।।

देखने भर को उन्हें, बस सड़क की दूरी दिखी "राही",
दरमियान ऐसे भी, के एक दरिया भी कम लगने लगा।।

लटें

ये रब्त हमारे जो भी है, हक़ीक़त है,
कोई फ़रेब या फसाना नहीं।।

ये "राही" के जज़्बात, उसके दिल की बातें हैं,
कोई जुमला या फलाना ढिमकाना नहीं।।

बड़ी मुद्दतों से हम, तेरे इश्क़ की राह देखे हैं,
हमारा कोई, दो - पांच सालों का, आना जाना नहीं।।

बड़ी शिद्दत से हम, तेरे कद्रदान भी रहे है,
हम कोई, ऐरे - गैरे, आशिक - आवारा नहीं।।

प्यासा इश्क़ और कागज़ी दिल है मेरा,
अपनी गीली लटें लाना, मगर हमपे झटकाना नहीं।।

उम्र

जो तुम चुरा रहे हो, निगाहें हमसे,
ये निगाहें तुम्हारी, हमसे मिलाने केलिए है।।

अल्फाज़ जो समेटे, बैठी हो तुम खुदमें,
ये हमपे, हुक्म जताने केलिए है।।

जुल्फें जो कानो पे, बिठाए बैठी हो तुम,
खोलो इन्हें, ये हमें छांव दिलाने केलिए है।।

जीन रातों को, दिन कर रही हो तुम अपने,
ये रातें, हमारे ख्वाब सजाने केलिए है।।

मत रंगो खुदको, पुरानी तस्वीरों में तुम,
हर नया दिन, इक नई तस्वीर बनाने केलिए है।।

तुम गिला करो, शिकवा रखो, शिकायतें भरो हमसे,
"राही" तुम्हारे ही तो काम आने केलिए है।।

पर जिस उम्र की, नसीहत दे रहे हो तुम हमे,' जानी '
सच है की, यही उम्र मोहब्बत कर जाने केलिए है।।

मेरा खुदा

तुझमें शोखी है, शरारत का ख़ज़ाना भी है,
तुझमें एक ठहराव है, एक सफ़रनामा भी है।

क्या बेबसी है कि तुझको पाया नहीं मैंने,
क्या उलझनें हैं कि ख़ुद को तुझमें खोया भी है।

डूबे थे इश्क़ में, समंदर समझ के,
समझ आया कि इश्क़ एक किनारा भी है।

अपनी अर्ज़ी भी करे कैसे ख़ुदा से "राही",
तुझी में दिखता मुझे, मेरा ख़ुदा भी है।

दिवाली दिलवाली

दास्तान-ए-फलक रौशन है आज की शाम,
ये ठीक उसके नूर-सी कोई कहानी हो गई है।

इन आतिशबाज़ी भरे शोर-शराबों से दूर,
दिल उसके एक अल्फ़ाज़ों पे मवाली हो गई है।

निगाहें ढूँढती फिरती हैं अब भी वही मंज़र,
कि जैसे रौशन मेरी क़िस्मत पुरानी हो गई है।

हर एक जुम्बिश पे उसके नक़्श-ए-पा का गुमान,
कि जैसे दीयों की हर लौ में एक रवानी हो गई है।

बड़ी बेताबी से इंतज़ार था उनके दीदार का,
उनकी तस्वीर से रौनक "राही" की दीवाली हो गई है।

जादू-ए-अक्स

सुनहरे और सब्ज़ का वो मेल, वो जादू-ए-अक्स,
एक आईने में उसकी नज़ाकत रंग लाती है।

भरे गुलाबी गाल की सादगी में छिपी है मस्ती उसकी,
उसके कमर की वो लचक, हर क़दम पे बल खाती है।

चेहरा गर पर्दा भी हो तो, आँखों में है चमक बाक़ी,
शोखी भरे मासूमियत है जो उसके हर पर्दे को हटाती है।

हर लिबास, हर सूरत, इक फ़न का है शाहकार उसका,
दीदार-ए-हुस्न की ये आरज़ू, कहा ही कभी रुक पाती है?

क्या कहूँ उसके बारे में, वो तो ख़ुद में एक ग़ज़ल है,
हर साँस, हर धड़कन "राही" की उसे ही गुनगुनाती है।।

मुकम्मल हुआ इंतज़ार

मुकम्मल हुआ, उनके दीदार-ए-हुस्न का शुरूर,
उनका हुस्न ऐसा जो तोड़ दे उस चांद का गुरूर।।

ये जो बाजुएं है उनकी, गोरी और कोमल सी,
जिनमें दिखता हैं, इक कयामती जुनूनी शुरूर।।

उनके बादलों सी मचलती जुल्फों की लटें है,
जिनका सुगंध भी हो, मानो एक महकता सुरूर।।

दीपों के दरमियाँ, वो कुछ इस कदर खड़ी थी,
मानो खरा हो फलक से उतर कर खुद इक नूर।।

पंखुड़ी सी कोमलता में, लबों पे मुस्कान लिए,
होंठ ऐसे भरे है, जैसे भरे होते है रस भरे अंगूर।।

उनके निगाहों में एक ज़ाम है, एक जकड़ है गहराई की,
जिनमें डूबते ही क़ैद हो जाए अच्छे अच्छे मगरुर।।

कह न सका कुछ, बस खोया रह गया "राही" उनमें,
उस पल थी दिवाली, हम उसी पल दिल दे आए हुज़ूर।।

चेहरा

हथेली के साए में छुपा चेहरा लगे,
रहस्य कोई, मोहब्बत का सहरा लगे।

बालों की लटों में चाँदनी उलझी हुई,
हर रेशा किसी ख्वाब का पहरा लगे।

गालों की नर्मी में छुपा नूर-ए-ख़ुदा,
हर मुस्कान पे दिल फिर से बेसहरा लगे।

नाक की नज़ाकत, नथ की चमक के साथ,
हर मोड़ पे उनका हुस्न सुनहरा लगे।

उनके लबों की कहानी है सबसे हसीन,
उन लबों का हर मोड़ समंदर सा गहरा लगे।

हल्की सी नमी, जैसे बारिश की छुअन,
हर किनारा उनके बोशे सा रिश्ता लगे।

ये होंठ अगर बोलें तो किस्से बन जाए,
ख़ामोश भी हों तो "राही" के शेर का चेहरा लगे।

सोलह श्रृंगार

काजल तेरी आँखों का — मेरी रातों की स्याही है,
बिंदी तेरे माथे की — मेरी किस्मत की गवाही हैं।

कुंडल तेरे कानों में — मेरे राज़ों का असर होगा,
मंगलसूत्र तेरे गले का — मेरी साँसों का सफ़र होगा।

पायल तेरे पाँवों की — मेरी तन्हाई का शोर होगी,
महावर तेरे होंठों का — मेरी चाहत का दौर होगी।

गजरा तेरे बालों का — मेरी खोई हुई ख़ुशबू हैं,
अंगूठी तेरी उँगली की — मेरी दबी हुई आरज़ू हैं।

कंगन तेरे हाथों का — मेरी बेबसी की खनक होगी,
कपोलों पे लाली तेरी — मेरी बेचैनी की धड़क होगी।

साड़ी का आँचल तेरा — मेरी प्यास का परदा होगा,
नथनी तेरे नाक का — मेरी ख्वाहिश का दरिया होगा।

कुंकुम तेरे माथे का — मेरी रूह की पहचान होगी,
सिंदूर की लाली — मेरी मोहब्बत का जहान होगी।

तेरे मर्जी बगैर, तेरे सोलह श्रृंगार में मैंने खुद को पाया है,
तू नहीं भी आई तो समझना "राही" ने तुझे ही निभाया है।

तुम मासूम नहीं

आज यूँ ऐसा दिख, तुमने गुनाह किया है,
साड़ी काली, काजल काले, काली ज़ुल्फ़ें तेरी,
आये हाय, यौवन पे जो ही श्रृंगार किया है...

यूँ ऐसे आ, तूने हुस्न वालों को रुसवा कर दिया,
लटें काली, झुमके काले, काले आँचल तेरे,
दिल तो दिल, तूने जिस्म-ओ-जवानी पे वार किया है..

तुम अगर अकेले में दिखते, तो भी बेहतर था,
यूँ इस साँवली शाम में, सबके सामने आ,
तूने आशिक का कत्ल, सरे-ए-आम किया है....

ना दुआ काम आएगी, ना कोई दवा लगेगी अब,
"राही" को जिन्दा जला दिया, तेरी इस रंगत ने,
तूने आज हुस्न को ही, अपना हथियार किया है....

हुस्न-ए-आख़िर

तेरे जैसी बातें तो शायद कहीं ढूँढ लूँ मैं,
पर जो रूह जला दे, वो जज़्बात कहाँ से लाएँ।

बेशक मिल जाएँगी मंज़र में कई नज़रें भूरी,
मगर जिनमें हम फ़ना हो, वो आँखें कहाँ से लाएँ।

हुस्न तो मिल जाएगा किसी गली, किसी कूचे में ज़रूर,
पर दिल पे कयामत ढाए, वो हुस्न-ए-आख़िर कहाँ से लाएँ।

होगा मोहिनी को अपनी नेमत-ए-हुस्न का गुमान,
पर तेरी काम़त सा ये क़ातिल लोच, उन ज़बानों में कहाँ से लाएँ।

सबने साफ़ साफ़ देखे होंगे हसीन ख़वाब बंद आँखों से,
पर तेरी एक झलक से नशा हो, वो खुली आँखें कहाँ से लाएँ।

तुझे संवरने की ज़रूरत नहीं, तू खुद एक मुकम्मल ग़ज़ल है,
पर जो सादगी में ये आग है, वो बाकी ज़माने में कहाँ से लाएँ।

'राही' अब गुज़र गई उम्र, हज़ारों चेहरों के दरमियां,
पर जो तुझपे आके ठहर जाए, वो मंज़र-ए-आख़िर कहाँ से लाएँ।

चाहत और चाय

तू अगर इजाज़त दे तो,
आज चाहत और चाय पे एक नज़्म लिख दूँ।

जो मैं लिखूँ एहसास हर घूँट का,
क्या उसमें तेरी एक-एक सिसक लिख दूँ।

लिखना जो अगर मैं चाहूँ मिठास जहाँ,
क्या वहाँ तेरे लबों का ज़िक्र लिख दूँ।

और जब लिखने बैठूँ चाय की तपन,
तो गुस्ताख़ी माफ़ करना, जो तेरा बदन लिख दूँ।

"राही" की शामें अधूरी हैं बिना इस महक के,
जो तू सामने हो, तो इसे मुक्कमल जश्न लिख दूँ।

मर्मर सा शख़्स

वो एक मर्मर सा शख़्स है, जिसकी मिसाल नहीं,
जिसे लिखने की जुर्रत, किसी के कलाम में नहीं।

गुल, शबनम, फूल, कली सब अधूरे रह गए,
जो ख़ुशबू उसके बदन में है, वो तमाम में नहीं।

भँवरे भी रूठ गए अब तो अपनी पंखुड़ियों से,
लज़्ज़त जो उसके बोसों में है, वो किसी जाम में नहीं।

लहरें कभी बना ही ना सकीं कोई भँवर उस सा,
जो रवानी उसके बदन में है, वो किसी मक़ाम में नहीं।

सारे बाग़ की रंगत सिमट आई है उसके चेहरे पर,
जो निखार उसके चेहरे में है, वो सुब्हो-शाम में नहीं।

अब क्या तलाशें हम दुनिया के वीरान बाज़ारों में,
जो सुकून उसके बदन में है, वो किसी आराम में नहीं।

वो महज़ एक जिस्म नहीं, खुदा की कोई आयत है,
जो सादगी उसके बदन में है, वो किसी एहतराम में नहीं।

"राही" थक गया उसकी तारीफ़ें लिखते-लिखते,
वो हक़ीक़त उसके बदन में है, जो किसी कलाम में नहीं।

जूठे अधर

यहाँ रूखा-रूखा सा मौसम है और बे-रंग सी यादें,
मेरी गुज़रती है हर शाम, बे-मक़सद हर किसी दिन।

थक चुका हूँ मैं पी-पी कर रोज़ की ये चाय फीकी,
घोल जा मेरे अधरों में, तेरे लबों की मिठास किसी दिन।

मेरी साँसों में जो ये कड़वाहट सी भर गई है,
आ और उतार दे, अपनी रूह की चाशनी में किसी दिन।

ये सर्द हवाएँ अब जिस्म को जलाने लगी हैं मेरे,
आकर ओढ़ा दे मुझे, अपनी बाहों की तपिश किसी दिन।

उबल रहा है ये वजूद जो मेरा तेरी दीद की हसरत में,
कभी बुझा दे ये आग, अपने बोसों की नमी से किसी दिन।

"राही" को अब ये प्याली महज ज़हर मालूम होती है,
आ और इसे अमृत कर दे, अपने जूठे घूँट से किसी दिन।

जन्मदिन

ख़ुदा करे, तेरे चेहरे की रौशनी न ढले,
तेरी ये बे-ख़ुदी ये लबों की हँसी न ढले ....

आज का ये तेरा रस्म-ए-जहाँ अदा हो,
तेरी ख्वाहिश बाम-ए-फलक पे सज़ा हो ....

'राही' की दुआ है, की तोहफे में सिर्फ दुआ हो,
तू जहाँ भी रहे, वहाँ बस खुशियों का सिलसिला हो।

तुम्हे सदा हुस्न की ताबिंदगी मिले,
इस जहान की तुम्हे हर खुशी मिले ....

तुम्हे ता-उम्र की मुस्कान मुबारक,
तुम्हे ये सालगिरह की शाम मुबारक .....

इस होली

तू सफेद कुर्ती पहने हो, मै मुरेठे संग सफेद कुर्ता।
तू भागे रंगो से बचके, और मै हाथों में लिए रंगो का मटका।

एक पल को पकड़ लू कलाई तेरी, खींच लूं तुझे क़रीब मेरे।
भर लु हथेली गुलाल से, और रंग दूं सारे के सारे लिबास तेरे।

कुछ ऐसी होली तुझे, इस बार खेलाऊं,
तेरे गाल पे गुलाल, अपनी गाल से लगाऊं।
और तू न रोके, न टोके, न सवाल करे।।

चाहे लाख लगे हो रंग अबीर मुझपे,
फिर भी मै रंग जॉन तेरे रंग में।
इस होली, कुछ ऐसा तेरा रंग "राही" पे कमाल करे।

उसकी आँखों में

उसकी आँखों में उतर कर देखो, तो एक सोने सा जहाँ दिखता है,
उसकी आँखों के ही किसी कोने में, सूरज भी रोज़ ढलता है।

अजीब है जायका उसकी नज़रों का, कि वो ज़हर से भी तीखी हैं,
मगर वहीं कहीं, शहद से भी गहरा एक मद का मिठास बोलता है।

उसकी आँखों में इश्क़ की ठंडी फ़िज़ाएँ भी हैं और प्यास भी,
वो जाम तो बस नाम का है, असली नशा तो उसकी नज़रें घोलता है।

प्यार की गर्माहट भी है वहाँ, और पाकीज़ा सादगी भी,
मगर उन्हीं मासूम पलकों के पीछे, कोई शरारत सा दाँव चलता है।

कहीं रेत सी प्यासी ज़मीन नज़र आती है उसकी पुतलियों में,
तो कहीं उन्हीं गहराइयों में, एक पूरा आसमान भी ढलता है।

आसमान के तमाम तारे भी उसकी आँखों में झिलमिलाते हैं,
कि जैसे उस भूरे मोती के सदके, ख़ुद चाँद भी वहाँ चमकता है।

उसकी आँखों में समंदर की लहरें हैं, जो हर पल मचलती हैं,
एक हसीन रास्ता है वो, जहाँ पहुँच कर हर सफ़र ठहरता है।

वहाँ मुसाफ़िर बनकर जीना भी एक हसीन गुस्ताख़ी है 'राही',
कि वो महफ़िल ही ऐसी है, जहाँ हर कोई हर पल मरता है।

उसकी निगाहें

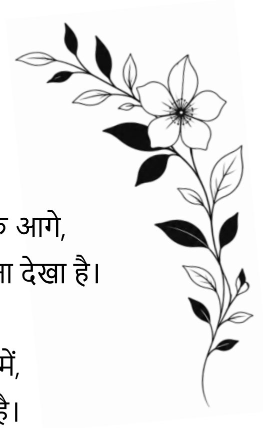

तू यक़ीन कर कि तेरी इन नज़रों की सफ़ेदी के आगे,
आसमान ने भी खुद को फीका और बे-ठिकाना देखा है।

बात ज़ायके की हो तो तेरी इन कटीली नज़रों में,
हमने हर घूँट को शहद से ज़्यादा तीखा देखा है।

सिर्फ़ एक झलक में साँसें रोकने का ये जो हुनर है,
हमने तुझमें ही बस ये क़ातिल सलीका देखा है।

तेरी आँखों की गहराई देख कर आज वो सहम गया,
एक दरिया ने खुद को पहली बार छोटा देखा है।

तू यक़ीन कर कि पलक उठा के जो देख ले तू चाँद को,
चाँद भी कह दे कि आज उसने कोई शीशा देखा है।

सच्चाई में "राही" के लफ़्ज़ अब कम पड़ने लगे हैं,
उसने तस्वीर में उतरा हुआ एक करिश्मा देखा है।

बेदाग चांद

ताज की उस सफ़ेदी के आगे, मैंने इक हरा बाग़ देखा है,
जैसे तपती दोपहर में, कोई ठंडी छाँव का सुराग़ देखा है।

पूरी जवानी गुज़ार दी हमने, फ़लक के चाँद को निहारते,
और उम्र भर उस चाँद की पेशानी पे, इक दाग़ देखा है।

ताज के साए में उसे देख, अपनी नज़र पे यक़ीन न आया,
ज़िंदगी में पहली मर्तबा मैंने, कोई चाँद बेदाग़ देखा है।

संग-ए-मरमर की वो सारी नफ़ासत, उसके हुस्न के आगे पानी भरने लगी,
उस बे-जान पत्थर की सफ़ेदी में, मैंने धड़कता हुआ इक चराग़ देखा है।

'राही' लोग आते हैं पत्थर के दीदार को, और लौट जाते हैं,
मैंने उन मीनारों की छाँव में, उतरता हुआ अपना बाग़ देखा है।

तेरी तस्वीर से जाना

दिन को ख्वाबों में उलझे रहे,
शब-ए-शबाब की शुरुआत ही थी,
तेरी तस्वीर से जाना.....

हम "राही" रास्ता नहीं भटकते,
मगर भटके, तेरी आँखों में,
तेरी तस्वीर से जाना......

सेहरा सी आँखें हैं मेरी,
मगर इनमें अम्बर भी टूटते हैं कभी,
तेरी तस्वीर से जाना.......

कुछ यूँ गुजार देते हैं, हम पल तुझमें,
जैसे चाँद गुजर के, सूरज हो जाए,
तेरी तस्वीर से जाना.....

मोहब्बत हमारी

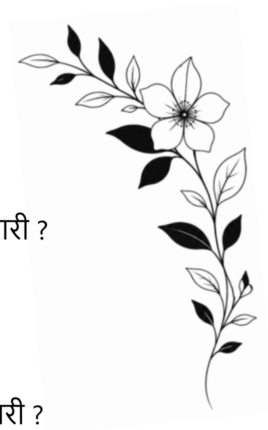

कोई कभी पूछेगा हमसे, कौन है मोहब्बत हमारी ?
तो नाम नहीं बताऊंगा, पर बता दूंगा
इशारों इशारों में बनावट तुम्हारी।

कोई कभी पूछेगा हमसे,कैसी है मोहब्बत हमारी ?
तो हाल नहीं बताऊंगा, पर बता दूंगा
इशारों इशारों में सारी शरारत तुम्हारी।

याद रखना नाम नहीं बताऊंगा,
पर जता दूंगा सबको,

के बचपन के स्कूल से, जवानी के शुरूर तक,
नीट की कोचिंग से, पटना के इंस्टीट्यूट तक,
कोई और नहीं तुम्हारे सिवा उल्फत हमारी।

कलाई के कलावे से, कानों पे उन चार छेदों तक,
ज़ूलोजी की किताबों से, रूह के उन भेदों तक,
सिर्फ तुम ही तुम हो, इबादत हमारी।

दस मिलो की दूरी से, घर की उस दहलीज तक,
एक ही रिश्ते से, पूर्वजों की तमीज़ तक,
उसके खानदान सी है, खानदान की विरासत हमारी।

आधी फरवरी से, उन ज़ुल्फ़ों की शाम तक,
पाँच-पाँच के उस कद और, दीवानगी के नाम तक,
हर इशारे में सजी है, ये हकीकत हमारी।

चेहरे के उस गोरे रंग से, बालों की उस लंबाई तक,
बिना श्रृंगार की सादगी और, जेवर की ना-चाहत तक,
कोई और नहीं जचता, ऐसी है ये चाहत हमारी।

कोई कभी पूछेगा हमसे, कौन है मोहब्बत हमारी ?
तो नाम नहीं बताऊंगा, पर बता दूंगा
इशारों इशारों में तुम ही मोहब्बत हमारी।

मोहब्बत

रोज करता हूँ मै इबादत तुम्हारी,
मोह लेती है मन मेरा ये सजावट तुम्हारी।

मोहिनी कहूँ तो समझो बनावट तुम्हारी,
धड़कनें थाम देती है बस आहट तुम्हारी।

नज़र में बसाकर ये जो काजल लगाया है,
क़यामत ढाती है आँखों की ये शरारत तुम्हारी।

खूबसूरती की सारी की सारी कहावत तुम्हारी,
सच तो ये है कि बस तुम ही हो चाहत हमारी।

ज़माने की बंदिशें रोक न पाएंगी कभी,
रूह में बस गई है अब तो आदत तुम्हारी।

न कोई तमन्ना, न दुनिया की कोई हसरत है,
मेरे जीने का मकसद है बस इनायत तुम्हारी।

अगर खुदा लिखे कभी भी नसीब मेरा "राही",
तो लिखे सिर्फ और सिर्फ तुमको मोहब्बत हमारी।

समझ

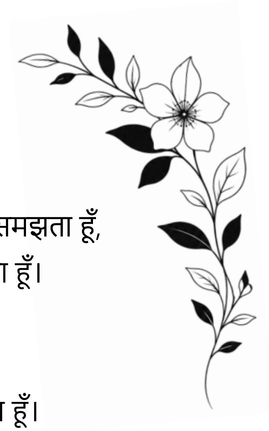

रात भर खिड़की से आती हवा को, तेरी बात समझता हूँ,
उस हर ठंडे झोंके में भी, तेरा इंतज़ार समझता हूँ।

दिल के कोने में रखे, कुछ लम्हे बोल उठते हैं,
मैं उन बोलते अक्षरों को, तेरा इज़हार समझता हूँ।

मौसम बदलते हैं, और साथ ही लोग भी...
मैं हर गुज़री घड़ी को, तेरा इंतकाम समझता हूँ।

चुप रहकर भी, खुद से रोज़ लड़ता है,
मैं तेरी हर खामोशी को, तेरा इंतखाब समझता हूँ।

कुछ पल सिर्फ गुज़रते नहीं, वो ठहर जाते हैं,
मैं हर रुकी रह गई साँस को, तेरा नाम समझता हूँ।

कई चेहरे रोशनी में दिखते हैं रोज़ मुझे,
मैं हर अंधेरे में बस, तुझे तमाम समझता हूँ।

इश्क सिर्फ पाने का नाम होता तो सब जीत जाते,
मैं हर हार में भी, तुझे इनाम समझता हूँ।

वो घड़ियाँ जो तेरी यादों से भीगती हैं अब भी,
मैं उन गीले वक्त को, अपना सलाम समझता हूँ।

'राही' रह गया बेकार सी आवाजों के दरमियाँ,
मैं हर टूट के बिखर चुकी खामोशी को, कलाम समझता हूँ।

सफ़र

रास्ते अनेक हों, और रास्तों में तुम —
तब तो मैं सफ़र सुहाना देखूँ...

पेड़, पहाड़, नदी, बहारें सभी हैं —
बस तुम नहीं हो, तो क्या ही मैं जमाना देखूँ...

छांव भी है, हवा भी है साथ मेरे —
तेरी ही कमी है, तो किसका मैं सहारा देखूँ...?

कुछ मोड़ पे जुगनू भी हैं साथ ही रौशनी भी —
मगर बिना तुझे देखे, मैं क्या चांद, कौनसा सितारा देखूँ...

हर मौसम मेरा तुझी से है गुलज़ार लगता —
फिर तू ही बता, तेरे बिना क्यों मैं कोई नज़ारा देखूँ...?

जब तेरे बग़ैर हर मंज़र मुझे अधूरा लगता है,
तब क्यों मैं वादियों में होकर, वादियों का इशारा देखूँ...?

माह-ए-फरवरी

मैंने जीना सीखा उसके, घड़ी दर घड़ी में,
मेरी दुनिया बस्ती है, इसी फरवरी में।

मैं किसी और दिन का मुबारका नहीं देता किसी को,
मेरे लिए उसी का दिन खास होता है, फरवरी में।

उसे सजने संवरने की आदत नहीं है बिल्कुल,
आदतन वो अदाएं बिखेरता है, फरवरी में।

वो दिखने को होती ही है, गुज़ारे भर के लिए,
उसे कुहासा छुपा जाता है, फरवरी में।

ज़माने भर की खुशियाँ हों मुबारक ज़माने को,
मुझे तो मेरा चाँद मिला है, फरवरी में।

मोहब्बत में चराग जला तो रहा है "राही" पर,
क्या जनवरी जितनी ठंड कभी आएगी, फरवरी में?

हर महीने के सात दिन

हर महीने के शुरुआती, सात दिन,
तेरे लिए, एक त्योहार की तरह बना होगा,

वो हर एक दिन, प्यार और तोहफे से भरे होंगे,
वो हर रात और दिन का, तेरा दर्द मेरा होगा,

कमरे में, तेरे पसंद के फूल होंगे,
किसी थैले में गुनगुना पानी भरा होगा,

हाथ में होंगे, तेरे पसंदीदा खिलौने,
बिस्तर पे मुलायम, तकिया भी पड़ा होगा...

बनेंगे तेरे पसंद के हर खाने वहाँ,
वहाँ तेरे लिए, कुछ मीठा भी रखा होगा..

हाथ में होगी, तेरी पसंदीदा चाय,
चाय में मसाला तेरे हिसाब से डाला होगा...

जब भी तेरे दिन, होंगे दर्द की दौर में,
तेरे हर दर्द की राहत का, ज़िम्मा मेरा होगा...

सजे होंगे फिजाओं के हर पल, तेरे पसंद से,
वहाँ हर पल फिजा, तेरे रंग में रंगा होगा...

तेरे मन मरज़ी की महफिल होगी,
तू गुनगुनाए, वो गाना बजा होगा...

पसंदीदा फूल होंगे तेरे बालों में,
तेरे पाँव में पायल भी बँधा होगा....

ये सिर्फ तुझसे सात दिनों की बात नहीं होगी,
ये मेरे महीने महीनों का इरादा होगा....

रहूँगा हर दुख, दर्द में साथ तेरे,
ये "राही" का तुझसे, एक अटूट वादा होगा...

हर महीने के शुरुआती, सात दिन,
तेरे लिए, एक त्योहार की तरह बना होगा...

हसरत

गुफ्तगू से इनकार है, तो ये इनकार ही सही,
पर लफ़्ज़ों के संग अपनी मुस्कान तो दिखाया कर।

सुना है अकेले दिखना तुझे अब नागवार गुज़रता है,
तो कभी अपनी सहेली के ही संग दिख जाया कर।

जानता हूँ कि ज़ुबाँ पर मेरा ज़िक्र तक नहीं होगा,
पर मेरी मोहब्बत के किस्से तो कहीं फ़रमाया कर।

तुझे मेरी परवाह नहीं, तो चलो ये भी मंज़ूर हमें,
मगर मेरा इतना गुज़ारा कर, कि बस दिख जाया कर।

माना कि दरमियाँ हमारे अब कोई वास्ता नहीं रहा,
पर रकीबों की महफ़िल में ही सही, नज़रे तो मिलाया कर।

तड़प उठती है रूह मेरी तेरे दीदार की हसरत में,
हो सके तो कभी धूप बनके मिरे आँगन में आया कर।

"राही" की तुमसे बस एक आखिरी हसरत है के,
तू कभी मेरी तलाश, तो कभी मेरी मंज़िल बनके दिख जाया कर।

ठंड

जब कभी भी मिलो हमसे, तो तुम ठहर जाओ,
बस इस गुजरते हुए बे-रहम वक्त को, चले जाने दो।

सुना है गाँव में फिर से, सर्द हवाएं लौट आई हैं,
आने दो इन बर्फीली रातों को, इन्हें भी आ जाने दो।

बस इस कयामत की ठंड में, एक तुम अपना लौ रखना,
और उस लौ की तपिश में, मेरा ये जिस्म तप जाने दो।

दबे पांव आए मौत भले, हमें कोई परवाह नहीं,
तेरी बाहों के घेरे में, आज ये रूह निकल जाने दो।

दुनिया मांगती होगी उजाले, अपनी रातों के लिए,
हमें तुम्हारी यादों के, साए में और भी ढल जाने दो।

उलझने दो मेरी सासों को, अपनी इन ज़ुल्फ़ों में,
इस अंधेरी रात के सन्नाटे को, और बढ़ जाने दो।

खामोशियां ही अब हमारी, दास्तां सुनाएंगी "राही",
तुम बस लबों को लबों पे रख, ये शोर थम जाने दो।

दुआ-ए-बहाराँ

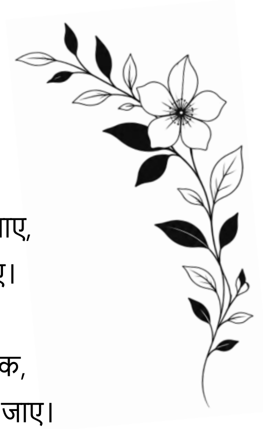

मुबारक हो नया ये साल, तुम पर मेहरबाँ हो जाए,
जो देखा है तुमने ख़्वाब, वो अब दास्ताँ हो जाए।

तुम्हारी शख़्सियत में ढल गई है सुबह की रौनक,
रहो रौशन हमेशा तुम, ये जग भी गुलसिताँ हो जाए।

लिखो तुम कामयाबी के नये मज़मून काग़ज़ पर,
तुम्हारी इल्म की शौकत, फलक का आसमाँ हो जाए।

सलामत तुम रहो, सेहत तुम्हारी रश्क-ए-गुलशन हो,
हसीं चेहरे पे ये मुस्कान, सदियों का निशाँ हो जाए।

न आए आँच कोई तुम पर, न कोई ग़म तुम्हें छुए,
तुम्हारा दिल है शीशा, ये ख़ुदा की अमान हो जाए।

"राही" लफ़्ज़ों में करे क्या मदह तुम्हारी सादगी की,
तुम्हें जो देख ले इक बार, तुम पर ही फ़िदा हो जाए।

दुआ है 'अक्स' बनकर साथ रौनकें तेरे चलें,
जहाँ तुम पाँव रक्खो, वो रास्ता भी बोस्ताँ हो जाए।

चाय पे आना

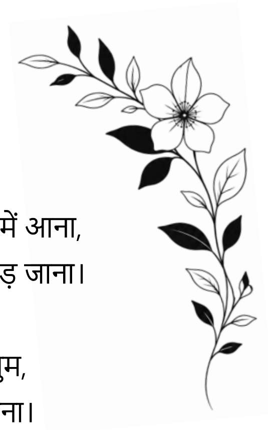

किसी रोज़ फुरसत में तुम चाय पे, मेरे आंगन में आना,
जाते-जाते अपना दिल, मेरी चौखट पे वही छोड़ जाना।

कुल्हड़ से उठते उस मुड़ते धुएं की तरह ही तुम,
मेरी राह भी अपनी धड़कनों की ओर मोड़ जाना।

बड़ी मुद्दतों से जो होंठों पे रुकी है बात हमारी,
एक घूंट बाद ही, होंठों को दबाते हुए बोल जाना।

जहा प्याली थामते हुए अपनी उंगलियाँ मिल जाएं,
उसी लम्हे को थामना, और उसी पल में मुझे मोह जाना।

दहलीज़ पर रुक के, एकदफा मुड़ना, मुस्कुराना,
फिर लौट आने का कोई एक बहाना खोज जाना।

"राही" के सूने कमरे को आदत हो गईं हैं अब तुम्हारी,
तुम फिरसे जब आना तो, मेरी एहसासों का हो जाना।

समझता हूं

इस जहाँ में, एक तू भी है जिसे मैं अपना समझता हूँ,
तू वाकिफ़ है, तेरे सिवा औरों को सिर्फ़ चेहरा समझता हूँ

क्यों शिकायत है तुझे कि, मैं तेरा शिकवा नहीं समझता,
कह के देख, तुझे मैं तुझसे ज़्यादा खुदका समझता हूँ....

जुबां खामोश है मेरी, मगर ये दिल तो बोलता है,
मैं तेरी हर खामोशी को, एक गहरा मशवरा समझता हूँ....

भले ही दूरियाँ कुछ पल को हमको आज़माती हैं,
मैं तेरे हर कदम को, मंज़िल का रास्ता समझता हूँ....

ज़माने की इन राहों में, भले ही भीड़ भथेरी हो,
तुझे मैं धूप में ठंडी सी, पुर-सुकून छाया समझता हूँ....

थकन सदियों की है लेकिन, तेरे कदमों की आहट पर,
मैं खुद को इक थका हारा सा बस 'राही' समझता हूँ....

सच्चा साथी

मुझे न ज़रूरत होगी किसी निशान की,
ना टूटते तारे, ना आसमान की।
वो चेहरों में नहीं, एहसासों में होगी,
जिसकी ख़ामोशी भी मेरी जज़्बातों में होगी।

वो चुपचाप आएगी, कोई शोर नहीं होगा,
बस पास बैठेगी — जैसे और कोई और नहीं होगा।
उसकी हँसी में होगा जाना-पहचाना सा सुकून,
जैसे बिछड़े ख्वाब फिर मिल जाए किसी जून।

वो पूछेगी वो बातें, जो और कोई न पूछ सका,
और कहेगी वो बातें, जो मैं खुद से भी न कह सका।
वो मुझे पूरा नहीं करेगी — बस दर्पण होगी,
मेरी हर परत को दिखाती हुई, मुझे समर्पण होगी।

जब वो मेरा हाथ थामेगी, वक़्त थम जाएगा,
दिल जो हर किसी से छुपता था — खुल जाएगा।
जब वो रोएगी, मैं भी भीग जाऊँगा,
उसकी हर ख़ामोशी को भीतर तक महसूस कर पाऊँगा।

ये प्यार न होगा जो चीखे या चिल्लाए,
ये वो होगा जो ख्वाबों में चुपचाप चला आए।
और जब एक रात वो मेरा नाम कहेगी,
मैं तब जान जाऊँगा — अब ज़िन्दगी सही जगह बहेगी।

ख्याल

ना रौशनी, ना साया, ना अपना कोई नाम,
तेरे गाँव में होना ही, बुरा हाल है मेरा।

ना हमदर्द, ना आवाज़, ना कोई छाँव पास हैं,
धूप में जलके भी मुस्कुराना, कमाल है मेरा।

जिसे वक़्त भी बेवजह कहकर गुज़र गया,
उसी बेवक्त मोहब्बत का सवाल है मेरा।

ना शिकायत रही, ना कोई दावा अब,
सिर्फ़ खुद को ही खो देना, एक मलाल है मेरा।

कभी लौट आओ ये कहने की भी हिम्मत नहीं रही,
अब तन्हा मर जाना ही मिसाल है मेरा।

जिसे एक दफ़ा भी फुर्सत से देखा नहीं मैने,
बस उसी एक चुप चेहरे पे हर सवाल है मेरा।

रूह कब की टूट गई, साँसें अब भी चलती हैं,
हर रोज़ टूटकर भी हँसना — कमबख़्त मिसाल है मेरा।

'राही' अब कोई तसल्ली भी ज़हर सी लगती है,
हर धड़कन में बसना — एक बुरा खयाल है मेरा।

ख़्वाब

वो पास हो, और शमा खास बने,
साँसों की साँसों से, एक मुलाकात बने।।

सिर थके, एक गोद मिले,
तब तो रात भी, हसीन रात बने।।

कभी साँसे कहे, और आँखें सुने,
धड़कन थरथराए, ऐसी शुरुआत बने।।

जुल्फें बिखरें, रात ढले,
बिस्तर भी कभी - कभी जज़्बात बने।।

लब भींगे और लम्हे थमे,
जिस्म से रूह निकल के, बरसात बने।।

नज़रे छुए, प्यार भरे,
ख़ामोशी खुद कभी कोई बात बने।।

"राही" छूना चाहे, ख़्वाब को,
कभी ख़्वाब भी, उसकी सौगात बने।।

अधूरा सा मैं

कभी तो अल्फ़ाज़ से आगे बढ़ो,
कभी तो ख़्वाबों में बुलाओ हमे,

तुम्हारा बस एक इशारा काफी है,
मगर तुम हर बार आज़माओ हमे।।

चुप हूं तो मत समझो बेपरवाह हूं,
तुम्हारा हूं, तुम बस अपना बनाओ हमें।।

हर बार तुम दूर जाते हो मुझसे,
कभी नजदीक आके सताओ हमे।।

इश्क में हार मान लेगा "राही" खुशी से,
मगर पहले आंखों से रुलाओ हमे।।

गले लगाओ मुझे

तुम्हे शक है, तो आओ आजमाओ हमे,
मै हु अगर गलत, तो आईना दिखाओ हमें।

मुझे एक वक्त हो गया है, किसी वक्त में तुम्हे देखे हुए,
खट-खटाओ झरोखें को, तुम आज नज़र आओ हमें।

दिन रात के हालातों से, आँखें भिगो रहा हु मैं,
सहरा करो मेरी आँखें, अपनी आंखों में सजाओ हमें।

तुम्हारे एहसासों के सिवा, मै पत्थर हु सभी एहसासों का,
नर्म लहज़े भेजो मुझ तक, तुम टूटने से बचाओ हमें।

शब, सुबह, समाँ, शबाब, आज सबके सब गुजर जाने दो,
बस थाम दो समय तुम, और बांहों में समेट जाओ हमें।

इक जुनूनी शुरूर जो है, तुम्हारी क़यामत बांहों का,
वो क़यामत टूटने दो, तुम बस आज गले लगाओ हमें।

उसके ख़ातिर

वो अगर बता देता उलझनें अपनी...
तो हम रिवाजों से बग़ावत कर भी सकते थे।

वो शख़्स अगर हमें एक बार को अपना कहता,
तो उसके ख़ातिर हम अपनों से लड़ भी सकते थे।

वो कह देता हमें इश्क़ नहीं सिर्फ अश्क (आँसू) देगा,
तो हम दरिया-ए-अश्क से गुज़र भी सकते थे।

बेहतर होता अगर वो हमें कह देता छोड़ जाओ,
हम एक इशारे पे इश्क़ से मुकर भी सकते थे।

मगर वो चला गया बग़ैर हक़ीक़त बताए...
उसके जाने पे हम"राही" जान से ठहर भी सकते थे।

खबर सुनी है

ज़हन में शोर उमर रहा है इतना, के आवाज बैठ रही है,
बदन में सांस रेंग रही, जिस्म से जान निकल रही है।।

लिखने बैठ गए हालात, दिल और दिमाग से हिंदी में
जाने हालत कैसी हैं कि, हाथ उर्दू लिख रही है।।

है कोई शिकवा लबों पे, है आँखों में कोई आंसू मेरे,
है एक अनकही हसरत भी, जो मेरा कलेजा मल रही है।।

मेरी बर्बादी का मंजर, उसे दिखता नहीं शायद,
कि उसकी महफ़िल में अब भी, एक शमा जल रही है।।

हैरत नहीं हो रही हमे, अगर "राही" पे अब मिट्टी डाले तो
खबर सुनी है कि, वो अब निकाह पढ़ने जा रही है।।

उल्फ़त-ए-शाम

क्या बताऊँ कैसे गुज़ार देता हूँ,
अपनी उल्फ़त-ए-शाम उलझनों में...

वो कहीं मशरूफ़ मग्न बैठा होता है,
अपनी मनमर्ज़ी की महफ़िलों में...

वो एक दिल-ए-ख़्वाहिश रखता है कि,
मैं दरिया-दरिया भटकूँ हर समर (सफ़र/राह) में...

हमें रत्ती भर साहिल (किनारा) भी नसीब न हो,
ये आरज़ू है उसकी, दरिया-ए-इश्क़ के सफ़र में...

हमें छोड़ कर शाम-ए-फ़िराक़ में चला गया है वो,
बनने को चश्म-ए-नाज़, किसी बेवफ़ा की नज़र में...

मेरा बुलबुल अब मुझसे गुफ़्तगू नहीं करता "राही"...
मगर किया करता है ज़िक्र मेरा, वो अपने दिलबरों में।

छोर दे

उसके वक़्त-बेवक़्त की बेरुखी अल्फ़ाज़ों में...
उसे कैसे कोई सोचना-समझना छोड़ दे।

ये आशिक़ी ही तो उसके आसमान के नाटक हैं,
चाँद भी कैसे किरदार बदलना छोड़ दे।

हर घड़ी बिखर रही हैं उम्मीदें मेरी...
तो क्या अब ख़्वाबों को समेटना छोड़ दे।

माना तू चाँद है, बादल में छिप जाएगा...
तो क्या उसे अब सितारे चमकना छोड़ दे।

बेहतर वाकिफ़ हूँ मैं किस्मत के करतूतों से,
क्यों न दो साहिल (किनारों) के सफ़र को परखना छोड़ दे।

तू न बताया कर "राही" को उसके इश्क़ की राह,
वो जानता है किधर जाए, किधर चलना छोड़ दे।

छोटा बेटा

एक छोटा बेटा, जो अपनी हद में हुआ करता था...
एक बड़ी बेटी के लिए, अपनी हद से गुज़र गया।

महबूब और मोहब्बत से जिसका ताल्लुक न था...
वो माशूक और मोहतरमाओं पे बहक गया।

वो इश्क़ में, जिस्म का ज़िक्र क्या बताए कभी...
जो आशिक़ी में, उसके पाजेब पे ठहर गया।

नशा उसके पूरे नस्ल ने नहीं किया उतना...
जितना किसी की तड़प में, वो जवानी में कर गया।

तेरे इंतज़ार में, उसकी हालत देख ली यार ने...
उसी रात उसके छत से पंखा उतर गया।

बेवफा वो लड़की नहीं, पर ये सच है "राही"...
कि उसकी फिराक में, एक शरीफ लड़का बिगड़ गया।

जिस्म-परस्ती

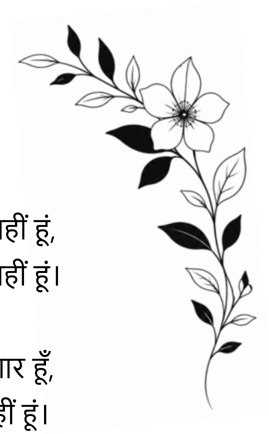

मैं अब उसकी जुस्तजू में दर-ब-दर, फिरता नहीं हूं,
किसी बस्ती, किसी भी कूचे से अब, गुज़रता नहीं हूं।

उसे ये वहम है कि मैं उसके जिस्म का तलबगार हूँ,
पर मैं ख़ाक हूँ, ख़ाक की इबादत में, मरता नहीं हूं।

वो जिसे मौक़ा-परस्ती समझ के मुझ से रंजिश रखती है,
मैं ऐसी मोहब्बत का गुनाह, कभी भी करता नहीं हूं।

उसे इल्म ही नहीं कि ख़्वाबों में भी मेरी नीयत क्या थी,
मै नींद में भी, जिस्म-परस्ती का तकाज़ा करता नहीं हूं।

मेरी रूह की प्यास का आलम बस मेरा ख़ुदा जानता है,
मैं नुमाइश के लिए अब, आँखों को भी भिगोता नहीं हूं।

'राही' अब वो चाय भी ठंडी होकर ज़हर हो चुकी है,
मैं अब महफ़िल में बैठकर, भी चर्चा बनता नहीं हूं।

अखबार होना पड़ा

दो वक़्त की रुसवाई में, हम इस तरह भुला दिए गए,
कि दो वक़्त की ख़ातिर, हमें रोज़ का अख़बार होना पड़ा।

उसके इंतज़ार की तलब में, हमने पूरी रातें खो दीं,
कि उसके इक दीदार में, हर सुबह को शाम होना पड़ा।

हम तो महज़ इक साया थे, जो उसकी धूप के साथ ढल गए,
हक़ीक़त से मुँह मोड़ कर, हमें ही ख़ुद ख़्वाब होना पड़ा।

ज़माने ने हमारी क़द्र बस उतनी ही रखी, जितनी ज़रूरत थी,
कि अपनी ही महफ़िल में हमें, अनजाना मेहमान होना पड़ा।

अब तो हमारी अपनी आवाज़ भी, हमें सुनाई नहीं देती 'राही',
कि किसी की ख़ामोशी को सुनने के लिए, हमें बे-ज़ुबान होना पड़ा।

आरज़ू नहीं रही

आपकी आरज़ू अब नहीं रही मुझमें,
आपके लिए अब मैं ख़ुद को फ़ना नहीं करता।

जिस हाल में छोड़ गए आप हमें इस जहाँ में,
कोई अपनों से भी ऐसा गुनाह नहीं करता।

चाँद गवाह है मेरी वीरानियां का अब तक,
पर दिल अब आपके नाम का शिकवा नहीं करता।

जाम छलके भी जो कभी, आपके नाम का साक़ी,
मैं हाथ रोक लेता हूँ, पर सजदा नहीं करता।

वो जो आँखों में नमी है, वो किसी और सबब से है,
मैं आपके गम में अब, ये आँखें गीला नहीं करता।

गुज़ार दी हमने उम्र अपनी, जो ज़ब्त-ए-ग़म में,
अब "राही" ज़िक्र-ए-यार में, वक्त ज़ाया नहीं करता।

जिस्म-परस्ती

मैं अब उसकी जुस्तजू में दर-ब-दर, फिरता नहीं हूं,
किसी बस्ती, किसी भी कूचे से अब, गुज़रता नहीं हूं।

उसे ये वहम है कि मैं उसके जिस्म का तलबगार हूँ,
पर मैं ख़ाक हूँ, ख़ाक की इबादत में, मरता नहीं हूं।

वो जिसे मौक़ा-परस्ती समझ के मुझ से रंजिश रखती है,
मैं ऐसी मोहब्बत का गुनाह, कभी भी करता नहीं हूं।

उसे इल्म ही नहीं कि ख़्वाबों में भी मेरी नीयत क्या थी,
मै नींद में भी, जिस्म-परस्ती का तकाज़ा करता नहीं हूं।

मेरी रूह की प्यास का आलम बस मेरा ख़ुदा जानता है,
मैं नुमाइश के लिए अब, आँखों को भी भिगोता नहीं हूं।

'राही' अब वो चाय भी ठंडी होकर ज़हर हो चुकी है,
मैं अब महफ़िल में बैठकर, भी चर्चा बनता नहीं हूं।

बे-तकल्लुफ़

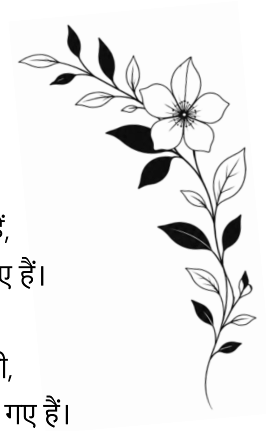

अब तो मेरी तबाही के नए नए बहाने हो गए हैं,
कि तुमको याद आए हुए भी अब ज़माने हो गए हैं।

वो जो दिल में एक ख़लिश सी थी तुम्हें पाने की,
अब उस बात को गुज़रे हुए भी कई ज़माने हो गए हैं।

अजब है ये तुम्हारी मौजूदगी का तमाशा भी,
कि तुम आए नहीं, और हम तुम्हारे दीवाने हो गए हैं।

तुम अगर न आते तो शायद हम सँवर भी जाते,
मगर अब तो ये घर, तुम्हारी यादों के ठिकाने हो गए हैं।

हक जताने की वो जो पुरानी एक आदत थी हमारी,
उसके हर एक क़िस्से भी तो अब पुराने हो गए हैं।

'राही' अब क्या पूछना उनसे उनके आने का सबब,
कि वो अब आए भी तो, जैसे हम अनजाने हो गए हैं।

मोहब्बत की सज़ा

कभी फ़ुर्सत मिले तो पूछना मेरी इन उजड़ी रातों से,
कि मेरे घर में अब तेरी जगह, ये ख़ला क्या है।

बड़ी बे-बाक उड़ती थी जो कभी इन फिज़ाओं में,
उन बे-चैन साँसों को अब मिली ये सज़ा क्या है।

मिरे इज़हार पर तुम एक पल में रुख़सत हो तो गए,
मगर ये तो बताते कि आख़िर मिरी ख़ता क्या है।

मुहब्बत मुकम्मल हुई तुम्हारी, तो ये आलम है,
तुम्हें मालूम क्या, कि इस हिज्र की इंतहा क्या है।

अजब इक एक-तरफ़ा आग में हम जल के राख हुए,
तुम्हें ख़बर ही नहीं, कि इसकी लज़्ज़त-ओ-फ़ना क्या है।

'राही' अब क्या ही गिला करना उस मासूम शख़्स से,
जिसे पता नहीं, कि एकतरफा इश्क की सज़ा क्या है।

तारीख़ बदल गई

तारीख बदल गई, पर मैं अब भी रहा तेरी ही यादों में,
नींद हवा हो गई, अरमान ख़ाक सी लग रही है रातों में।

शायद फ़िज़ाओ में, अब भी तेरी अदा शामिल है,
जाने क्यूं, बदन में आग सी लग रही है रातों में।

तेरी साँसों की गर्मी, अब भी महसूस होती है हवाओं में,
एक अजब सी हलचल, मची हुई है मेरी इन बाहों में।

चाँद भी जल रहा है शायद, तेरी रंगत देख कर,
तन्हाई भी अब तो, चुभ रही है मेरी इन पनाहों में।

ये रात नहीं, ये तो तेरी जुल्फ़ों का साया है शायद,
जो एक मीठा सा दर्द, घुल रहा है मेरी इन आहों में।

बुझती नहीं ये प्यास, तेरे लबों के ज़िक्र के बिना,
तू शामिल है "राही", की हर दुआ हर बयानों में।

अंज़ाम

बातें अक्सर उसकी बर्बाद करने वाली...
दुआएं वो हर दफ़ा आबाद करने के देती है...

एक साम, महबूब के चले जाने पे ख़बर हुआ,
कि मोहब्बत में, जिन्दगी ऐसे भी शबाब देती है...

कॉलेज के दिन तो किताबों में गुज़ार दिए,
मग़र कमरे की रातें — जीना मुहाल कर देती है...

जिसे देख कर एक दौर में सुकून मिलता था,
अब वो तस्वीरें भी तन्हा हिसाब देती है...

जिसे हर रोज़ दिल की तरह ज़िंदा रखा है,
वही यादें अब साँसों को ख़राब कर देती है...

हम उजड़ भी जाएं तो ग़म नहीं होता अब,
"राही", मोहब्बत शायद ऐसे ही अंज़ाम देती है...

मोहब्बत से डर गया

एक मैं हूँ... जो तेरे ज़िक्र तक में नहीं,
एक तू है... जिसकी कहानी लिख रहा हूँ मैं।।

गुज़र गईं मेरी कईं शामें तक़दीर के सहारे,
और इश्क़ का अंजाम तक ना समझ सका हूँ मैं।।

एक मुद्दत से, ना तेरा हुआ, ना ख़ुद में रहा,
अब कहीं दरमियाँ टूट के रह गया हूँ मैं।।

कभी खुदा से शिकवा, कभी खुद से सवाल,
तेरे इंतेज़ार में हर मोड़ पे थम गया हूँ मैं।।

लबों पे तेरा नाम, मगर आवाज़ में ख़ामोशी हैं,
इतना गहरा चुप हूँ, कि ख़ुद में ही सिमट गया हूँ मैं।।

वो कह गया — "क़िस्मत से पहले ही छोड़ दो",
और सुन के ये, अपनी मोहब्बत से डर गया हूँ मैं।।

ना कोई ग़म बाँटने वाला, ना कोई वजह बाकी,
बस तुझसे वफ़ा करके, बेवफ़ा सा बन गया हूँ मैं।।

"राही" बुरा नहीं था, बस वक़्त बेरहम था कुछ यूँ,
की तेरे जाने के बाद भी, तेरे यादों पे ठहर गया हूँ मैं।।

मुहब्बत तमाम

तेरे आने के इंतज़ार में...
रातें बेबाक़ होती जा रही हैं।
अरमान कई जो सजा रखे हैं...
वो सारी की सारी ख़ाक होती जा रही हैं।

हवाओं के थमने को...
तेरे साँसों का ठहराव समझ रहा हूँ।
बादलों के कालेपन को...
तेरी ज़ुल्फ़ों का घेराव समझ रहा हूँ।

ज़िंदगी बग़ैर तेरे मौजूदगी के...
पूस की रात (कड़ाके की ठंड) होती जा रही है।
ये जिस्म तेरी यादों के नशे में...
दो वक़्त की मेहमान होती जा रही है।

तू जो अगर अब भी न आई, तो समझ जाऊँगा कि...
मोहब्बत अब "राही" की तमाम (ख़त्म) होती जा रही है।

मुसाफ़िर

कोई जीता रह गया, अपने जज़्बात छुपाए...
कोई उसका चाहत बन बैठा, बात बना कर।

किसी ने अकेले में कई मौसम गुज़ारे...
कोई गुज़ार गया शाम, उसे साथ बिठा कर।

किसी ने दम तोड़े, उन निगाहों की जंग में...
कोई जंग जीत गया, अपने आँसू बहा कर।

किसी ने उसे नूर-ए-जन्नत बताया...
कोई ले गया नूर, मकान को जन्नत दिखा कर।

किसी ने सजाए फ़लक (आसमान) पे ख़्वाब उसके...
कोई चुरा गया ख़्वाब, फ़र्श को फ़लक बता कर।

"राही" लिखता रह गया अपनी मोहब्बत उसे...
मुसाफ़िर ले गए मोहब्बत को, अपना बना कर।

भूल जाने के लिए

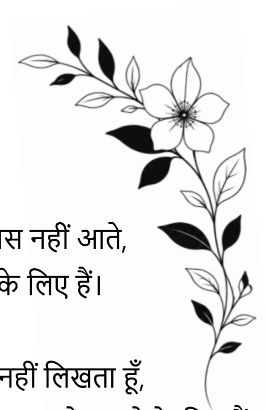

ये गाने, ये ग़ज़लें, क़िस्से, ये नज़्म... अब हमें रास नहीं आते,
ये सब के सब अब महज़ बस यूँ ही गुनगुनाने के लिए हैं।

ये शेर-ओ-शायरी मैं महफ़िल या सबके लिए नहीं लिखता हूँ,
ये लफ़्ज़ तो बस मेरे दिल का हाल, उस एक शख़्स को सुनाने के लिए हैं।

ये सिगरेट, ये सिगार, जाम, ये शराब का अपने शबाब में पीना, मेरा शौक़ नहीं,
ये मेरी आदत या फ़ितरत भी नहीं, ये तो बस किसी की याद भुलाने के लिए हैं।

वो पास नहीं है मगर उसकी मौजूदगी लहू में ज़हर बन कर दौड़ती है,
ये सारे जतन जो मैं कर रहा हूँ, बस उस आग को बुझाने के लिए हैं।

दुनिया समझती है कि मैं शब्दों के जाल बुन कर बहुत बड़ा हो गया,
यकीन मानो मेरे ये टूटे हुए शब्द, बस अपनी रूह को बचाने के लिए हैं।

लोग 'राही' के हर इक तहरीर पे, वाह वाही लूटाते है, मौज उड़ाते है,
क्या मेरे लफ्ज़, मेरी कहानियां, मेरी तकलीफ तालियां बजाने केलिए है।

शायर बताते हैं

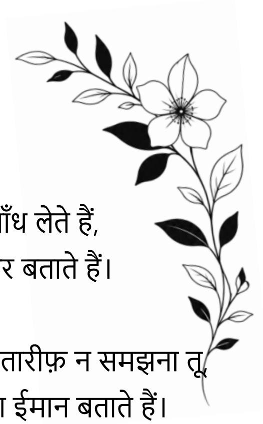

अजीब लोग हैं वो, जो हुस्न को चंद लफ़्ज़ों में बाँध लेते हैं,
वो जिन्हें ज़माने वाले, बड़ा शायर और सुख़नवर बताते हैं।

मैं जो कुछ लिखता हूँ तेरे अक्स पे, उसे महज़ तारीफ़ न समझना तू,
ये तो वो हक़ीक़त है, जिसे मेरे कलम और मेरा ईमान बताते हैं।

तिरे इश्क़ का असर अब मेरी ज़ात पे कुछ यूँ गहरा हो चुका है,
कि मैं अपने जज़्बात भी लिखूँ, तो लोग उसे शायरी बताते हैं।

बड़े-बड़े नामों ने भी जब कलम उठाई तेरी तस्वीर बनाने को,
तो वो बस अपने अधूरेपन को, एक मुकम्मल हुनर बताते हैं।

'राही' तो बस अपनी रूह की बे-चैनी, अपने ख्याल को काग़ज़ पे
उतारता है,
मगर ये लोग न जाने क्यों उससे, इश्क में हारा शायर बताते हैं।

तेरा ज़िक्र

ये ज़रूरी तो नहीं, हर पल तेरा दीदार हो,
तेरी याद के मंज़र, अब पुराने हो गए हैं।

मेरी मौजूदगी का अब, तू कोई सबूत न माँग,
तेरे दिए हुए ज़ख़्म ही, ठिकाने हो गए हैं।

ये लाज़मी नहीं कि, तू भी चाहे मुझे मेरी तरह,
पर तेरे लबों पे मेरे ज़िक्र, अफ़साने हो गए हैं।

तुझे पाने की ज़िद में, हम खुद से भी बिछड़ गए,
अब अपनी ही बस्ती में, हम अनजाने हो गए हैं।

बड़ी मुद्दत हुई कि, तूने मुड़कर देखा नहीं हमें,
हमारी आँखों के दरिया, वीराने हो गए हैं।

मिले जो तू 'राही' को, तो शायद ये धड़कन थमे,
वरना ये सादे से जज़्बात, कब के दीवाने हो गए हैं।

आखिरी चाय

आज से उसकी हर बलाएँ मेरी हुईं,
और मेरी सारी दुआएँ उसके नाम।

अब से मेरी हर मुकम्मल ख़्वाहिश उसकी,
और उसकी हर अधूरी इल्तिजा मेरे नाम।

अब से मेरे हर जज़्बात, हर लिखावट उसकी,
मेरी हर शेर-ओ-शायरी की फ़ज़ाएँ उसके नाम।

आज से मेरे हिस्से की धूप भी, उसे मिले,
मेरे आँगन की सारी ठंडी हवाएँ उसके नाम।

अब से उसे ख़बर भी न हो, और वो सँवर जाए,
मेरे वजूद की सारी ख़ुशनुमा सदाएँ उसके नाम।

आज ही "राही" की ये महफ़िल आख़िरी,
और आज ही ये मेरी आख़िरी चाय उसके नाम।

मुलाकात

आज इक मुसाफ़िर अपनी राह पे निकला है,
शायद किसी राही से अब, मुलाक़ात होने को है।

सूरज भी अपनी तपन समेट कर जल्दी ढल गया,
लगता है किसी चाँदनी का, दीदार होने को है।

फ़िज़ाओं में ये जो अजब सी तपिश बढ़ने लगी है,
अमावस की रात में कोई, बड़ी बात होने को है।

किसी की सुर्ख़ छुअन की एक छोटी सी चिंगारी से,
क्या किसी का सलोना बदन, अब आग होने को है।

लबों की ख़ामोशी में छुपा है जो बरसों का तूफ़ान,
शायद आज उस गहरे सन्नाटे की, मात होने को है।

उलझी हुई ज़ुल्फ़ों को जो सुलझाया है उसने,
शायद अब सारी कड़वी यादों का, नुकसान होने को है।

हथेली पे हथेली रख के जो वो पास आ बैठी है,
तय है कि, भटकी हुई रूहों का अब, मुक़ाम होने को है।

'राही' गुज़र गई उम्र महज़ एक कहानी बनते-बनते,
क्या आज सदियों पुराना दास्ताँ तमाम होने को है।

मोहब्बत हुई

मोहब्बत हुई तो लगा जवानी आ गई,
हाथों में ख़त, इश्क़ की खुमारी आ गई...

कम्बख्त, कशमकश में तो दिल रहा, फिर
जाने क्यों झुलसती मेरी जवानी रह गई...

इंतज़ार, इज़हार, इश्क़, सब बेशुमार रहा उनसे,
पर मोहब्बत में उनकी नाकामी रह गई...

अंजाम-ए-इश्क़ के कुछ ऐसे रंग रहे, जो
मेरी रंगीन ज़िंदगी को भी पानी कर गई...

कमरे से सब बेज़ार कर दिया मैंने, फिर भी
कागज़, स्याही, वो और उनकी निशानी रह गई...

हम फ़रियाद में रहे उन्हें भूल जाने की,
वो ना चाहते हुए भी हमारी रह गई...

लिखे लकीरों से उसने अपने हमसफ़र को,
इधर सफ़र आशिक़ी की मुँह-ज़बानी रह गई...

वो बना बैठे अपनी पसंद का आशियाना,
इधर अधूरी "राही" की प्रेम कहानी रह गई...

मुहब्बत के मुक़ाम

मोहब्बत के सातों मुक़ाम लिखूँगा... ज़िंदगी लिखूँगा,
या तो धड़कनों का आराम लिखूँगा।

पहले मैंने...दिलकशी लिखा,
उन पहली नज़र की बातों में...

उन्स लिखा,
जनवरी की गुफ़्तगू वाली रातों में...

मोहब्बत लिखा...
ग़ालिब की तरह, अपनी हर लिखावट में...

अक़ीदत लिखा...
उसके अल्फ़ाज़ों की आहट में...

इबादत लिखा,
उसे पाने की हर चाहत में...

जुनून लिखा,
उसके हर एक इंकार की बगावत में...

अंतिम में वो कहे तो... मौत भी लिख दूँ "राही"
बस उसकी एक इजाज़त में।

दम-ए-वापसी

दिल-ए-नादान तुम्हारे खबर भर की तालाश में,
हम कभी, इश्तहार के किसी खबर में होंगे।।

बस इक, तुम्हारी मोहब्बत की मंज़िल पाने को,
बस्ती-बस्ती, सड़क-सड़क के किसी सफ़र में होंगे।

जो वक्त गुजार रहा हु, एक शाम से शाम का, तेरी खातिर,
इसमें खता ना हो, इसलिए अबसे खुदा की नज़र में होंगे।

नजरों में जो नज़र बिठाए, मै एक नज़राना देख रहा हूं,
उस नजारे केलिए, ता-उम्र तेरी आशिकी के डगर में होंगे।

और जो रास्ता तुम तक, अगर नहीं गया हमारा "जानी",
हम ख़ुदा को छोर, तब मयखाने के किसी समर में होंगे।

मैं भले इक इक मय को भटकुंगा, मग़ध से महरूम मगर,
हम "राही" दम-ए-वापसी में, तेरी ही शहर में होंगे।

किसी के लिए

किसी के लिए हमने कभी, बदसुलूकी नहीं की,
किसी को खुश करने को, ख़ास नहीं बना....

किसी एक से सिर्फ, झूठी गुफ्तगू नहीं रखी,
किसी से सच कहा, पर उसका विश्वास नहीं बना...

किसी को पा जाने में, अक्सर दिल उदास रखा,
किसी के हो गए, कभी ऐसा एहसास नहीं बना..

किसी के रुखसार को, आईने सा देखा है हर दम,
किसी का साथ देने वाला, साँस नहीं बना...

किसी को अनचाहे, बहुत नाराज़गी दी हमने,
किसी का चाह कर भी "राही" मिठास नहीं बना।

गुजरने चला था

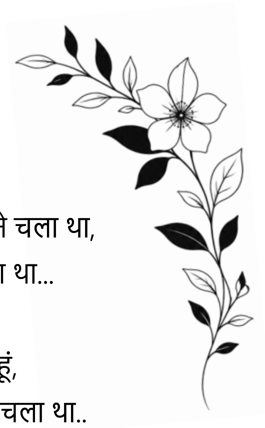

उसे अलविदा करके, उसकी ना-मनज़ूरी सहने चला था,
ज़ख़्म छुपाने को दिल के, अंधेरे में ठहरने चला था...

वो तो तेरी शर्तें थीं, जिन पर अब तक जी रहा हूं,
वरना हालात ऐसे है "याना" मैं जान से गुज़रने चला था..

तेरी खामोशियां अब भी मेरी आदत हैं,
तेरे इंकार में भी मैं तुझे क़ुबूल करने चला था...

लोग पूछते हैं क्यों तन्हा हैं "राही" इस भीड़ में,
क्या कहूं, एक शख़्स के लिए खुद से ही लड़ने चला था..

मोहब्बत के मसलें

इक अना थी मुझमें, मैंने तोड़ दी।
दिल को थामा, और अक्ल को छोड़ दी।

तुम सोचते रहे, मैं कभी टूट जाऊँगा?
एक दिन तुम्हारी चौखट से भी रूठ आऊँगा?

जानी, जान जाओ यह हमारा इश्क़ था।
बेशक इसमें हमें नुक़सान का भी इल्म था।

तुम ठुकराओ हमे, यह मर्ज़ी तुम्हारी रहेगी।
हम तो अहले-तलब हैं, हमारी तलब जारी रहेगी।

लोग कहते हैं, जुनून नहीं यह मेरा सलीका है।
तुम पूछो, तो यही तुम्हें चाहने का तरीक़ा है।

तुम हज़ार दफा इन्कार करना, हम यक़ीन नहीं छोड़ेंगे।
इन तमाशो में भी,हम "राही" कभी हस्ती नहीं मोड़ेंगे।

"याना" ये कोई बेबसी नहीं, मेरी इबादत है, इसे सुनो,।
ये "राही" के मोहब्बत के मसलें है, इन्हें ज़रा धीरे बुनो।

करेगा नहीं कोई

तेरे बिना ये दिल सम्भाल पाएगा नहीं कोई,
तेरे ख़ामोशी का ज़हर सह पाएगा नहीं कोई।

हमने मोहब्बत को अपने लहू से लिखा है,
इतना गहरा जुनून रच पाएगा नहीं कोई।

सारी जवानी जिन निगाहों से खेलते रहे हैं हम,
उन आँखों का नशा पी पाएगा नहीं कोई।

तमाम रात दोनों की होंठे हरकत करती रही है,
तमाम रात, इसके आगे जुर्रत कर पाएगा नहीं कोई।

जला के रख दिए हमने हर ख्वाब की चिंगारी,
ये राख भी अपनी आँखों में भर पाएगा नहीं कोई।

तूफ़ान बन के टूटे हैं हम अपने ही जहाज़ पर,
इस कदर की इस डूबते सफ़र को भी सह पाएगा नहीं कोई।

हमारे जिस्म पे दर्ज हैं हज़ारों ख़रोंचें,
यकीन है कि, ये दर्द अपनी रगों में ढो पाएगा नहीं कोई।

वो जिस तबाही से मेरी रूह रोज़ गुजरती है,
उस रास्ते को छू कर भी लौट पाएगा नहीं कोई।

लहू, ख़्वाब और खामोशी का मेला है यहाँ हर कदम,
सच है कि "राही" सी दास्तान कह पाएगा नहीं कोई।

किसे लिखूं

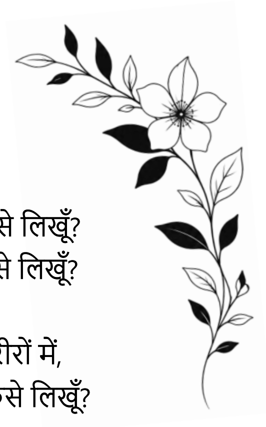

मेरा रिज़्क़ थीं उसकी आँखें, अब इंतज़ाम किसे लिखूँ?
बंद हुई है जब दुकान, तो ये कथा-कलाम किसे लिखूँ?

वो कह रही है कि मेरा चेहरा न आए तेरी तहरीरों में,
मैं थक गया हूँ बता, अब ये सुबह-ओ-शाम किसे लिखूँ?

एक आतिशी दास्तान-ए-इश्क़ थी जो मैंने काग़ज़ पे लिख डाली,
महज़ दर्द ये है कि उसमें 'तेरा वो नाम' किसे लिखूँ?

उसी के दम से थीं सारी ये रौनक़ें मेरे सफ़हों पर,
जो उसने छीन लिया हक़, तो अपना मक़ाम किसे लिखूँ?

बेरोज़गारी ये मेरी अब मुझे ही अंदर से खा रही है,
जब लिखना ही मेरा जुर्म है, तो अपना काम किसे लिखूँ?

वो एक शख़्स ही मेरी ग़ज़ल की रूह था, मेरी राहत था,
जब उसने कर दिया 'मना', तो 'फ़िक्र-ए-तमाम' किसे लिखूँ?

क़लम को तोड़ के फेंक दिया है मैंने आज ये कह कर,
कि जब वो ही नहीं है, तो दिल का कोहराम किसे लिखूँ?

"राही" के ' किताब में तुम हो ' और ये सच है मगर,
जो दुश्मन हुआ है 'वही', तो उसे सलाम किसे लिखूँ?

मै उनके, वो किसी और के

मैं उसकी राह में था, वो किसी की राह में था
मैं उसकी चाह में था, वो किसी की चाह में था

मेरे ही सामने उसने, रक़ीब का हाथ थामा
मैं अपनी ही किसी, गुमनाम सी गुनाह में था

उसे ख़बर ही नहीं थी, मेरे वजूद की शायद
वो शख़्स तो किसी, और की ही पनाह में था

मै ढूंढता रहा खुदको, उसकी निगाहों में
मेरा नसीब ही मेरी, उजड़ी हुई निगाह में था

मै एकतरफा मोहब्बत का तमाशा बन गया हूँ
वो जीत गया क्यों कि, वो उसकी ही सिपाह में था

"राही" वो तो कभी, मेरी तरफ़ मुतवज्जह ही ना था
वो डूबता हुआ सूरज, किसी और की सुबह में था

उसे "ना" कहना आता है

वो हमें झूठी तसल्ली दे सकती थी,
वो चाहती तो मेरी जान ले सकती थी।

खैरत है उसने ज़ख़्म को मेरे कच्चा न छोड़ा,
साफ़ "ना" कह दिया, भले ही मेरे दिल को तोड़ा।

उम्मीद देकर वो रुलाती नहीं,
झूठा ख़्वाब वो सजाती नहीं।

सच है कि, उसकी सचाई हमे मार गई,
एक इंकार वो मेरे दिल में उतार गई।

जमाने के फ़रेब और फ़साने से उसने बचा लिया,
मुझ कांटे से, उसने अपना दामन छुड़ा लिया।

क्या अजीब नशा है आखिर इस हार में,
"राही" तुझे इश्क़ हुआ भी तो उनके इनकार में।

हज़ारों नज़्म

हज़ारों नज़्में लिखूँगा और चुप रह जाऊँगा,
कहो, ये राज़-ए-मोहब्बत मैं कब तक छिपाऊँगा।

ख़याल-ए-ख़ाम है उनका, कि मैं उनका नहीं हु मै,
उनके ही साज़ पे मैं, अब हर गीत गुण गुनाऊंगा।

फ़क़त ये कह दूँगा दुनिया से, कि इक फ़साना है,
भला उनका पता भी मैं ज़माने को क्यूँ ही बताऊँगा।

उन्हें ख़बर ही नहीं, उनके शोख़ अदाओं की,
उन्हीं से पूछूँगा, फिर उनको को ही सुनाऊँगा।

ये उनकी बे-ख़बरी, इस पर मुझे है नाज़ बहुत,
कि वो न जान सके, और मैं लिखता जाऊँगा।

वो जानती नहीं, वो "राही" की हर तहरीर है,
हर एक शे'र को, ' याना ' आपका नाम दिलाऊँगा।

शिकस्त-ए-जनवरी

साल की पहली ही शाम थी, और मातम था हर घड़ी में
मेरा सब कुछ छीन लिया उसने, इस कमबख़्त जनवरी में

मैंने अपनी पैदाइश की दुआएं मांगी, अपनी जन्मदिन पर
उसने तोहफा में रकीब चुन लिया, इस मनहूस जनवरी में

उसे रक़ीब का साथ मिला, हमें मिली ये बे-बसी अपनी
मेरी हसरतों का जनाज़ा उठा, इस सर्द जनवरी में

न हाथ थामने दिया उसने, न घर आने की इजाज़त दी
सारे रिश्ते काट दिए उसने, इस बे-दर्द जनवरी में

मैं यादों के तोहफ़े मांगता रहा, वो दामन छुड़ाती रही
उसने मेरे रूह के टुकड़े निकाले, इस चुप-चाप जनवरी में

राही! अब कोई नया साल, क्या ख़ाक ख़ुशी लाएगा
मेरा इश्क़ ज़िंदा दफना गई वो, इस बेरहम जनवरी में

कोई कभी पूछे

कोई कभी पूछे तुझसे मेरे बारे में,
कह देना — था कोई, जो मिट गया तेरे नाम में।

जिसने हर मोड़ पे तेरा ही नाम लिया,
अब गुम है किसी अधूरी सी दास्तान में।

तेरे शहर से जो लौटा आया था ख़ाली हाथ,
अब भी जिंदा है सिर्फ़ तेरे ही ख़याल में।

था जो दीवाना, वही आज ख़ामोश है,
कुछ चुभा है शायद उस को तेरे इन्कार में।

तेरी ही गली से अब भी धुआं उठता है,
कोई जलता जो रहा है तन्हा तेरे इंतजार में।

वो जो मंज़िल समझ बैठा था तुझे,
वो आज भी कभी रुकता नहीं किसी मज़ार में।

वो जिसे तूने समझा था एक गुजरता मंजर,
अब भी गुजर रहा है तेरे हर एक इल्ज़ाम में।

जिसे हक तक नहीं था तुझसे शिकायत का,
उसी का दिल है टुकड़ा टुकड़ा, तेरे ही पैग़ाम में।

लिखा था इक खत, जो तूने पढ़ा तक नहीं,
अब रोज़ एक खत जलता है मेरी मकान में।

कहते हैं — कोई "राही" था, तेरी रौशनी में,
जो बुझता ही चला गया तेरी हर मुस्कान में।

अब याद नहीं करते

अब उस गली से गुज़र भी जाएं तो कुछ नहीं,
जिस मोर पे तुझे खोया, उसे --- अब याद नहीं करते।

वो खत भी अब नहीं ढूंढ़ते हम किताबों में,
तेरी लिखावट की सियाही से अब बात नहीं करते।

तेरे नाम वाला दर्द अब धुंधला सा लगता है,
हम आईनो से भी तेरा हिसाब नहीं करते।

कभी जो साँसे तुझसे बावस्ता थी, अब धुआं धुआं है,
अब वो खुद से भी कभी सवालात नहीं करते।

तेरी खामोशी से डर लगता था एक दौर में,
अब तेरे सन्नाटे से भी फरियाद नहीं करते।

"जाना" कुछ इस कदर तूम उतर गए हो रगों में मेरे, के
"राही" तुझे याद कर चुके है --- अब याद नहीं करते।

राहगुजर नहीं था

एक चेहरा रोज़ मेरी आँखों में उतरता रहा,
जिसके सिवा मेरा कोई और सपना नहीं था।

मैंने अपनी तन्हाई से बातें शुरू की थीं,
क्योंकि उस भीड़ में मेरा कोई अपना नहीं था।

मैंने उसे अलविदा कहा भी नहीं था कभी,
फिर भी ऐसा लगा जैसे अब और कुछ कहना नहीं था।

मैं हर बार सही वक़्त पे पहुँचा शायद,
मगर शायद वो वक़्त कभी मेरा नहीं था।

मैंने अपने हर ख़्वाब को ख़त की तरह रखा,
पर जिस तक पहुँचना था — उसका पता नहीं था।

मैंने तन्हा रहकर सबकुछ सीख लिया है अब,
शायद अब बस जीना, उसमे लिखा नहीं था।

जिसे हर शेर में महसूस करता रहा हूं मै,
उसका मेरी लकीरों में कोई नाम, कोई चेहरा नहीं था।

जिस रास्ते को मैंने घर बना लिया था "राही",
असल में वो रास्ता, वो राहगुजर कभी मेरा नहीं था।

अफसाना

तेरे बिना भी ये घर तेरा ही अफ़साना निकला,
हर दरवाज़ा तेरे जाने का ही तराना निकला।

मैंने तुझको न देखा, पर क्या तअज्जुब करूँ—
आईने में भी हर चेहरा तेरा ही बहाना निकला।

हाथ तेरे न थे, फिर भी हथेलियों पर आज
जो सन्नाटा जमा है, वही मेरा आशियाना निकला।

तेरी एक झलक भी नहीं, फिर भी कमरे में
हर परछाईं तेरा छोड़ा हुआ वीराना निकला।

तू मिली ही नहीं, पर तेरे होने के ख़याल से
मैं जितना भी टूटा—उतना ही ज़िंदा निशाना निकला।

तेरी दूरी ने जो धुंध चढ़ाई थी रूह पर,
उसे हटाया तो देखा—मैं खुद ही बेगाना निकला।

'राही' ने तेरे बिन जीना तो सीख लिया, लेकिन
हर सांस का हिसाब भी तेरे नाम का दिवाना निकला।

मुद्दत गुजार दूं

जब वो मुझसे, रुखसत होने लगा था उस रात,
उस रात के बाद हर रात, रूखसार पे हमारे पानी मिले।

दानिस्ता दीवार पे लगी, उसकी सारी तस्वीरें तोड़ डाली,
उन टूटे तस्वीरो के हर टुकड़े में, हमें हूबहू वो मुहानी मिले।

ख़्वाब जो सजाएं थे उसके लिए, वह हर ख़्वाब तोड़े मैंने,
उन टूटते ख़्वाबों के हर पहलू में, हमें उसकी कहानी मिले।

चाहत मेरी है के, मै उस इक फूल की चाहत चाहता हूं,
मगर वो नहीं चाहता के, मुझे कभी वो रात की रानी मिले।

नज़र में नहीं हैं वह, एक बड़े मुद्दत से मेरी नज़र में,
मैं मुद्दत गुजार दुं, जो नज़र को मेरे उसकी निगहबानी मिले|

दिल-ए-ख्वाहिश

उसे अपनी ज़िंदगी समझने वाला, एक जान...
क़िस्मत से बग़ावत में, बेजान पड़ गया।

सरकार, इश्क़ के हर दावे निभाए मैंने, और
मुक़दमा-ए-मोहब्बत में, वो शख्स लड़ गया।

मुबारक हो ऐ दिल-ए-नादाँ तुझे...
तू जीती वफ़ाई में, मैं बेवफ़ाई में हार गया।

मुबारक हो तेरी दिल-ए-ख्वाहिश मुक़म्मल हुई,
जा अबसे इश्क़ के सफ़र में, "राही" ठहर गया।

तेरी खुशियाँ जाना

तुझे नामंजूर है अगर मौजूदगी हमारी,
हम कभी तेरे बगैर भी सिख लेंगे जीना जाना।

तेरे लफ़्ज़ भी अब इल्ज़ाम नहीं लगते हमे,
तेरी बेरुख़ी में, मुस्कुराना जो सीख लिया जाना।

जो तू कहे वही सच, वही फ़ैसला होगा मेरा,
जा हमने मोहब्बत में तुझे, ये हक भी दे दिया जाना।

मग़र "राही" अब मर भी नहीं सकता, तेरे हिज्र से,
हमारी ग़म-ए-हाल ही, जो है तेरी खुशियाँ जाना।

अब हर दर्द मैं इसलिए भी जिंदा रखूंगा, इस जहां में,
मेरे लिए बस तेरी खुशियाँ ही है, मेरी दुनिया जाना।

उनके इज़हार को

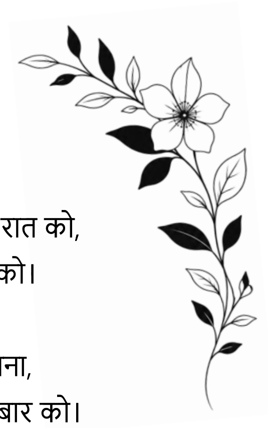

शाम ढलते ही, दिल और सुनसान हो जाता है रात को,
जैसे कोई आता जाता है, मेरे यादों के बाज़ार को।

हमने तो चाहा था उन्हें एक सच की तरह जानना,
उन्होंने ही देखा हमे, जैसे कोई देखता है अख़बार को।

जितना खोते जा रहे है हम, उन्हें सोचते-सोचते,
उतना तो पाया भी नहीं हमने इस संसार को।

लफ़्ज़ लिखते है तो लगता है हम ज़िंदा हैं,
वरना तो सौंप दिया है हमे ख़ामोशी ने, उनकी दरबार को।

आज उनके चले जाने से हमारे शहर में वीरानी है,
जिन्होंने आबाद किया था कभी हमारे उजाड़ को।

बस वक़्त की रेत पे चेहरा उनका ठहर न सका,
भले कितनी ही दफ़ा पुकारा हमने, उस इकलौते यार को।

उनके वादों पे यक़ीं करना भी इक किस्म की मौत है,
मैंने जीते हुए देखा है "राही" उनके उस इज़हार को।

बाकी है

हर ख्वाब में उनकी खींच रखी है इक कशिश हमने,
बस अब उनके एहसासों को खींचना बाकी है।

वो दूर हैं मुझसे मगर, हैं मेरे ख़याल में,
बस अब इक उनके वजूद को खींचना बाकी है।।

जा चुके राँझे के बटुए से वो तस्वीर निकाल कर,
अब बस नजरों से मेरी हिर निकालना बाकी है।

*वो आईना-ए-रूह तो कब का तोड़ चुके वो,
बस दिल से वो अक्स-ए-दिलरुबा निकालना बाकी है।।

अब जब उन्होंने हमसे सारे ताल्लुकात काट दिए है,
"राही" तेरा भी बस अब कलाई काटना बाकी है।

वो साँसों का बोझ है, अब उसे भी उतार दे,
बस अब धड़कनों का सिलसिला काटना बाकी है।।

छोड़ जाती थी

हर फ़ज़ाओं में वो अपने राज़ छोड़ जाती थी,
हमें भी इल्म था के, वो ना-साज़ छोड़ जाती थी।

ये जानता था कि क़िस्मत में जुस्तुजू ही नहीं उनकी,
वो जानती थी कि, वो दिल में नवाज़ छोड़ जाती थी।

मिरी पसन्द का उनको बेशक यक़ीन था लेकिन,
वो अक्सर इख़्तियार का एहसास छोड़ जाती थी।

फ़क़त ये डर भी था, कि ताल्लुक़ टूट जाए कहीं,
इसलिए भी वो बात-चीत के अन्दाज़ छोड़ जाती थी।

ये रोज़ शब का जो किरदार था, सहर तक था,
वो गांव में दो शरीक का, आग़ाज़ छोड़ जाती थी।

"राही" बना है तल्ख़ सा रिश्ता मग़र वो तन्हाई,
न जाने किस लिए ज़हन में आवाज़ छोड़ जाती थी।

बैठे है

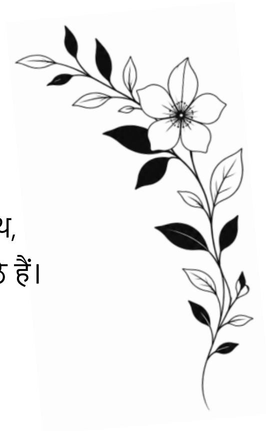

हवाएं भी गुज़रती हैं अब तो ज़रा अदब के साथ,
जबसे हम उनके ज़ुल्फों को चेहरे से हटाए बैठे हैं।

हमारी गुफ्तगू अब बोशे तक पहुंच चुकी हैं,
और हम उनकी नज़रों में नज़र बिठाए बैठे है।

तल्लुफ़ की ज़रूरत क्या, ये आलम ही गुलाबी है,
मानो जाम के नज़दीक हम साक़ी को पाए बैठे हैं।

बड़ी मासूम सी ज़िद है उन्हें पास रोकने की,
हम उनकी चुनर का कोना उंगलियों में दबाए बैठे हैं।

वो माँगते हैं मशवरा कि क्या पहनें आज महफ़िल में,
और हम उनकी पसंद का कंगन जेब में छुपाए बैठे हैं।

मंज़िल मिल आए

चाँद का ज़िक्र हो और मेरा चाँद निकल आए,
वो ख़्वाब में प्यारा है, हक़ीक़त में और भी निखर आए।

हवाओं ने बिखेरी है, जो उनकी ज़ुल्फ़ अभी-अभी,
वो इधर चेहरे पे फिसले, उधर बादल मचल आए।

उन्हें देखूँ तो लगता है कि मुकम्मल है इबादत मेरी,
वो मुस्कुराए तो जैसे ज़मीन पर जन्नत उतर आए।

वो जब सादगी में भी हज़ारों रंग बिखेर देती है,
उसकी एक झलक से मेरी रूह में भी नूर भर आए।

ख्यालों में जो छू लूँ तो धड़कनें बे-लिबास होने लगती हैं,
वो पास बैठे और, मेरे साँसों में उनकी इत्र घुल जाए।

ये हुस्न है या किसी शायर की कोई अधूरी ख़्वाहिश है,
वो लब खोले तो जैसे पत्थर से भी शहद निकल आए।

हज़ारों मंज़िलें हैं और राहे-मोहब्बत भी है "राही"
वो साथ चले तो हम मुसाफ़िर को भी मंज़िल मिल आए।

मोहब्बत का ऊसूल

वक़्त एक दफ़्तर का धूल होता है
इश्क़ करना शायद फ़िज़ूल होता है

जिसके आने की आस भी न रहे
उसका रस्ता भी बबूल होता है

दिल निचोड़ता हूं तब कहीं जा कर
मेरा ज़हर पीना वसूल होता है

एक हम हैं कि चुप ही रहते हैं
मगर उनका कहना मक़ूल होता है

वो जो मिलता नहीं है राहों में
बस वही तो एक हुसूल होता है

हार जाना भी एक जीत है 'राही'
यही मोहब्बत का ऊसूल होता है

बुरा होता है

वो चाय पूछे तो उसे टालना बुरा होता है
किसी को बे-वजह रोकना बुरा होता है

तपन तो चाय की बस हाथ तक ही रहती है
ज़फ़ा की आग में यूँ जलना बुरा होता है

तुम्हारी चुप से ये बातें बिखरने लगती हैं
हवा में बातों का यूँ थामना बुरा होता है

वो रखता है तुम्हारी पसंद का हर इक ख़याल
मिज़ाज देख के यूँ लड़ना बुरा होता है

वो माँगता है फ़क़त साथ, वक़्त, मौजूदगी
किसी को दहलीज से फेरना बुरा होता है

उसे सज़ा न सुनाओ कि वो है मुंतज़िर
बिना खता के यूँ रुख़सत करना बुरा होता है

पिलाओ ज़हर भी 'राही' तो हम पी लेंगे
मगर ये चाय का मना करना बुरा होता है

जीना नहीं आता

वो कहती है उनके दिल में, अब कोई रास्ता नहीं आता,
और मेरे इस साँस को उनके शिवा जीना नहीं आता।

हम उन्हें सोचते है तो, नया एक साल बनता है,
उन्हें मेरा ख़याल अब तक मगर, रखना नहीं आता।

वफ़ा की ज़िद में बैठे हैं थके-हारे मुसाफ़िर हम,
हमें राहों से मुड़ कर घर को, अब जाना नहीं आता।

उन्हें डर है कि रिश्तों में फ़क़त, बेवफ़ाई मिलती है,
मुझे उनके बिना कोई भी अफ़साना नहीं आता।

मोहब्बत साँस जैसी है, ज़रूरी है, मुसलसल है,
ये वो दरिया है जिसमें हमें तैरना नहीं आता।

वो अपनी प्यास की ख़ातिर किसी दरिया को क्यों रोके,
मगर "राही" को उनके बिन ठहर जाना नहीं आता।

ज़ख्म

फिर से उसने, खुद के ज़ख्म खुरेद दिए हैं,
फिर से उसके नाजुक नस, दबाए गए हैं।

ये आशिक़ी नहीं, खुद को मिटाने का सलीका है,
कि बुझते हुए दीये, फिर से जलाए गए हैं।

अजीब जिद्द है कि उसे, दर्द में मज़ा आता है,
उनके वही पुराने दाग, फिर से सजाए गए हैं।

जो रगें सूख चुकी थीं, यादों की तपिश में,
आज फिर एकदफा उन पर, पत्थर गिराए गए हैं।

वो अपने हाथों से ही, अपनी कयामत लिखती है,
ये कैसे जाल हैं, जो खुद पर बिछाए गए हैं।

हम तो मरहम लिए, दहलीज पर ही खड़े रहे,
पर अंदर खंजर, अपनी ही रूह में चुभाए गए हैं।

ये खानदानी रंजिशें, ये इज्जत के सख्त पहरे,
इन्हीं की खातिर, अरमान सूली चढ़ाए गए हैं।

"राही" वो शख्स अब, मुस्कुरा कर हाल पूछता है,
जिसके ज़ख्मों के निशाँ, दुनिया से छुपाए गए हैं।

इश्क का हिसाब

वही है जीत अपनी और वही अपना ख़सारा है,
मोहब्बत में नफा-नुकसान का मंजर भी बड़ा प्यारा है।

बड़ी मुश्किल से सीखा है ये फन हमने जमाने में,
कि जो जीता वही हारा, जो हारा वो तुम्हारा है।

कभी फुर्सत मिले तो दिल का तुम बही-खाता देख लेना,
कहाँ ख़ुशियाँ लिखीं हमने, कहाँ गम को उतारा है।

किसी की याद में रातें गँवा कर हमने क्या पाया?
बस इक वीरान-सी आँखें हैं, बस इक टूटा सितारा है।

दुकान-ए-इश्क में सौदे बड़े अजीब होते हैं,
यहाँ जो लुट गया समझो, वो सबसे अमीर-ओ-सहारा है।

नफा ढूँढा तो फिर रुसवाइयां ही हाथ आएंगी,
नुकसान-ए-वफ़ा में ही तो जीने का इशारा है।

अजीब इक कश्मकश में कट रही है अब ये उम्र अपनी,
न साहिल मिल सका हमको, न मौजों का किनारा है।

"राही" की तरह हम भी बस यही कहते हुए गुज़रे,
इश्क तो वो मुकद्दर है जो किस्मत ने बिगाड़ा है।

कुछ मील दूर

घर से कुछ मील दूर, एक लड़की है, खानदानी है,
मेरे खानदान को, उसका खानदान जानती है।

ये कैसी रस्म-ए-वफा है जो दरमियान खड़ी है,
वो हमें जानते हुए भी, अनजान जानती है।

हम एक अरसे से, उसे दिल में बिठाए बैठे हैं,
वो हमें अपनी यादों का, महज़ मेहमान जानती है।

उसे खबर ही नहीं कि वो रूह में समाई बैठी है,
वो बस हमें अपनी चौखट का, निगहबान जानती है।

शराफत की लकीरें दोनों तरफ ही गहरी हैं,
वो अदब की आड़ में, दिल का नुकसान जानती है।

मैं कह नहीं पाता हूँ, वो सुन नहीं पाती है,
मगर वो मेरी आँखों का, हर बयान जानती है।

वो जानती है कि फासले कभी कम नहीं होंगे,
वो मेरे हिस्से की तन्हाई का, हर सामान जानती है।

मैं पास होकर भी उससे, कोसों की दूरी पर हूँ,
वो मेरी हर खामोश आह को, अपना गुनहगार मानती है।

अजीब बेबसी है कि उसे पा भी नहीं सकते,
वो मेरी बेनाम मुहब्बत को, महज़ एक थकान जानती है।

तड़पता छोड़ दिया उसने मुझे उम्र भर के लिए "राही",
मेरे दिल के खंडहर को, वो महज़ एक मकान जानती है।

मेरे कलम में

अभी जवान है तू, तेरा शवाब बाक़ी रहना चाहिए,
उसकी यादों का अभी, हिसाब बाक़ी रहना चाहिए।

उसकी अल्फ़ाजों, हवाओं और अदाओं का क्या है,
ये आते हैं, आते थे, और इन्हें आते भी रहना चाहिए।

अगर ये आदत है उनकी, तो ये आदत बनी रहे,
ये सिलसिला यूँ, उम्र भर बेहिसाब चलते रहना चाहिए।

आख़िर महबूब है वो तेरा, तो ये हक़ भी है उसका,
तेरे दिल पे दस्तक देने का, ये रिवाज़ बाकी रहना चाहिए।

उम्मीद है मुझे याद रहे, तो सिर्फ़ उनका चेहरा रहे,
गर ना भी रहे, तो बस ये मलाल पलते रहना चाहिए।

"राही" के हाथ काँपें, या ये दुनिया छूट जाए,
मेरे कलम से, 'याना' का अक्स खिलते रहना चाहिए।

इश्क़ किए जाऊंगा

वो हुस्न है जिसका नज़ारा किए ही जाऊँगा,
और एक दर्द है, जो दिल में सिए ही जाऊँगा।

ये आँखें, जिन में सितारों की रौशनी ठहरी है,
इन्हें मैं दूर से तक कर बस जिए ही जाऊँगा।

जुल्फ़ जैसे घटा सावन की, जब जब शाना छू के गुज़रे,
मैं अपनी तन्हाइयों में एक आहें लिए ही जाऊँगा।

उन्हें ख़बर ही नहीं है मेरे मोहब्बत की,
मैं अपना इश्क़ हवाओं में दिए ही जाऊँगा।

वो संग-ए-मरमर का पैकर है, और मैं हूँ मिट्टी,
बस एक ख़्वाब की सूरत उसे छुए ही जाऊँगा।

वो बे-नियाज़ है अपनी अदाओं की दौलत से,
और मैं फ़ना उसकी चाहत में हुए ही जाऊँगा।

"राही" का नसीब है, जलना उनकी निगाहों में,
उनका जमाल है, जिसे देख कर मैं बुझे ही जाऊँगा।

उठा के लाया हूँ

तमाम रिश्तों के मसले उठा के लाया हूँ
मैं अपने ख़्वाबों के मलबे उठा के लाया हूँ

वो उसका दोष नहीं था, मिरी ही क़िस्मत थी
मैं ख़ुद ही अपनी शिकस्तें उठा के लाया हूँ

वो अपनी राह में ख़ुश है, उसे गिला क्या हो
मैं आज भी अपने घर के अंधेरे उठा के लाया हूँ

अजीब बोझ है जो दिल से कम नहीं होता
मैं अपनी लाश के टुकड़े उठा के लाया हूँ

जो कोई पूछता है "कैसे हो" तो कहता हूँ
मैं अपनी मौत के चश्मे उठा के लाया हूँ

हाँ ठीक हूँ मैं, कि ज़िंदा हूँ और लिखता हूँ
मैं अंदर से मरे हुए चेहरे उठा के लाया हूँ

ग़ज़ल में ज़िक्र तो 'राही' उसी का होगा बस
मैं जिसके नाम के सदक़े उठा के लाया हूँ

चाय के बहाने

वो सादगी, वो बातें, वो हर एक मंज़र याद आता है,
उसे जब याद करते हैं, हमे दिसंबर याद आता है।

उसे भी शौक़ था बेहद, हमें भी इश्क़ है इससे,
जब उठती है ख़ुशबू चाय से, हमे वो पैकर याद आता है।

अधूरी हसरतें लेकर हम अक्सर चाय पीते हैं,
उसे चाय अज़ीज़ है, वो हमें चाय के बहाने याद आता है।

धुएँ में उसके अक्स बनते है, हवाओं में नाम लिखता है,
वो इक चेहरा जो अब आँखों के अंदर याद आता है।

सहर हो या कि शामें हों, तलब कम ही नहीं होती,
पुराना साथ वो साक़ी, वो बिछड़ा "राही" याद आता है।

हुनर अपना

किताबों और दफ्तर की नज़र है आधा सफ़र अपना,
मगर तेरी यादों ने अब भी रौशन रक्खा है घर अपना।

रचा-बसा है तू रग-रग में कुछ इस तरह से जाना,
कि तेरे ज़िक्र को ही कर लिया है हमने नज़र अपना।

बुझती नहीं है लो तेरे तसव्वुर की हमारे ज़हन से,
धुआं बनकर सुलगता है अब तो जिगर अपना।

हां मै घर का छोटा बेटा हूं, मगर आवारा नहीं हूं मै,
बस तेरे इंतज़ार ने कर डाला है दिल दर-बदर अपना।

निकल जाता जो बाहर तो लहू रोती कुल की इज़्ज़त,
तो तेरे ख़्वाबों को ही बना लिया है हम-सफ़र अपना।

ज़माने की हकीकत है, ज़रूरत खींच लाती है,
वरना कौन करता है यूँ नीलाम हुनर अपना।

हज़ारों उलझनें हैं और ज़िम्मेदारियाँ सर पर,
कहाँ ले जा के अब रक्खें ये टूटा हुआ समर अपना।

हँसी ओढ़े हुए मिलते हैं हम महफ़िल में यारों से,
ताकीदें हमें कहती हैं, मत ज़ाहिर कर डर अपना।

शिकवा न तुमसे है 'राही' को न तुम्हारे जज़्बातों से है,
हमें हमारे इश्क़ ने ही दिखा दिया है अब असर अपना।

प्यार करूँगा

इरादा तो ये था कि सिर्फ़ प्यार करूँगा
कहाँ पता था कि खुदको ख़्वार करूँगा

ग़ज़ल सुनाना तो एक बहाना है मेरा
मैं बैठ कर बस तेरा इंतज़ार करूँगा

किताबें मुझको कहाँ सुहाती थीं
अब इन्हीं से मैं अपना गुज़ार करूँगा

जो हार जाना ही असल मोहब्बत है
तो मैं ये बाज़ी भी बार-बार करूँगा

लिखना आ गया है अब ये ज़ख़्म देख कर
मैं अपने दुखों का अब कारोबार करूँगा

हुनर नहीं है, ये मेरी शिकस्त है 'राही'
मैं मर न जाऊँ सो ये अफ़्कार करूँगा

लबों पे कश

हमारे कलेजे जलते हैं, अक्सर उसकी याद से,
वही याद बुझाने को, अब लबों पे कश जलता है।

लोग पूछते हैं ये धुआं कहां से उठा है हर दम,
क्या कहें कि अंदर अब भी, मेरा अक्स जलता है।

जुबान खामोश है मगर, आंखें अब भी लाल हैं,
सुना है तन्हाई में, अक्सर ही खामोश जलता है।

चलो एक और सुलगा कर, ये रात भी काट लो,
कि आज भी उसके ख्याल में, ये शख्स जलता है।

कहां की मंज़िल, और कहां का अब सुकून 'राही',
सफर राख हुआ, अब तो बस कश पे कश जलता है।

चले जाने दो

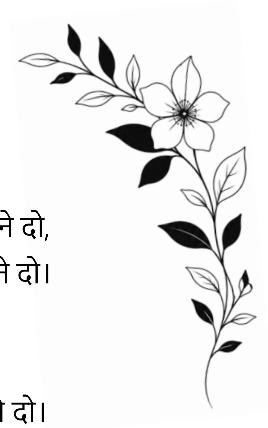

जो वो हमसे रुखसत हो रहे है, तो उन्हें हो जाने दो,
तुम एक शराब लाओ, मुझे ज़ाम लबों से लगाने दो।

वो मेरा होकर भी, कभी मेरा हुआ ही नहीं,
बनाने दो मुझे ये झूठा वहम और धुएँ में उड़ाने दो।

मैने पुकारा था उन्हें हर मोड़ पर लेकिन,
अब थक गया हूँ मैं, मुझे मयखाने में सो जाने दो।

उनकी गली में अब रौनक़ किसी और से हो रही है,
मुझे अपनी वीरानियों में, अब इक ठिकाना बनाने दो।

ये एक-तरफ़ा इश्क़ है, शायद एक-तरफ़ा ही रहेगा,
ये क़िस्सा अधूरा है, इसे अधूरा ही रह जाने दो।

"राही" जब राख बन जाए तो हैरत न करना ' याना ',
जाओ माचिस ले आओ, मुझे आख़री सिगरेट जलाने दो।

पायल मैं बनूँ

तेरे कदमों में ठहर जाने की तमन्ना है मेरी,
तेरे पैरों की झनकती पायल मैं बनूँ।

तेरी चाल के संग बहक जाऊँ हवा की तरह,
तेरे रक़्स की थिरकती पायल मैं बनूँ।

तेरी राहों से गुज़रते हुए ख़ुशबू बन जाऊँ,
तेरे सफ़र की सजती पायल मैं बनूँ।

तेरी नींदों को जगाने का भी शौक़ है मुझको,
तेरे बिस्तर की खनकती पायल मैं बनूँ।

तेरी हँसी के साथ गूँजूँ तेरे कानों तक सदा,
तेरे लम्हों की हँसती पायल मैं बनूँ।

तेरे मौसम की हर आहट में घुल जाऊँ मैं,
तेरे मौसम की सरगम देती पायल मैं बनूँ।

तेरे पाँव तले दबकर भी इज़्ज़त पाऊँ,
तेरे कदमों की सदा देती पायल मैं बनूँ।

तेरे दिल से उतरकर तेरे तन तक पहुँचूँ
तेरे जिस्म की धड़कती पायल मैं बनूँ।

तेरी थकान को भी मीठा बना दूँ हर पल,
तेरे आराम को राहत देती पायल मैं बनूँ।

तेरे इश्क़ की निशानी हो "राही" होने का सबूत,
तेरे पैरों की सजी हुई पायल मैं बनूँ।

Meta AI

पायल अता की हैं

तेरे क़दम से जब भी गुलिस्ताँ सँवर जाए,
उस आहट से मेरी तन्हाई निखर जाए।

चाँदनी तेरी चाल को जब चूमने लगे,
हर सितारा तेरे पाँवों पे बिखर जाए।

तेरे कदमों की धुन से मिल जाए सुकून,
जैसे रूह को कोई साज़ छूकर गुजर जाए।

तेरे आने की ख़बर देती रहे हर पल,
ज़मीन भी तेरे नज़दीक संवर जाए।

"राही" ने पायल इसलिए भी तुझको अता की है,
कि तेरे संग मेरी हर ख़ामोशी झूमकर उतर जाए।

सिलसिला

अजब ये इश्क़ और नौकरी का सिलसिला रक्खा है,
हमने एक अर्से से ख़ुद को, ख़ुद से जुदा रक्खा है।

पहुँच पाए न उस तक, न अफ़सर बन सके अब तक,
और अपनी दुनिया को दो दो उम्मीदों पे लगा रक्खा है।

किताबें खोल कर भी अक्सर उन्हें ही ढूँढते हैं हम,
पढ़ाई का तो महज़ एक फ़ासला बना रक्खा है।

हमने तमाम रात गुज़ारी है एक ही सफ़हे पर,
किताब सो गई हैं, मगर उनका ख़याल जगा रक्खा है।

बस किताबों में भटकना, और उनका ख्यालों में मचलना,
जवानी ने भी, अच्छा खासा तमाशा लगा रक्खा है।

हज़ारों ख़्वाब कुचल रहे हैं, एक कुर्सी की ख़ातिर,
और सीने में ही एक मोहब्बत भी दफना रक्खा है।

भले ही वक़्त की गर्द में धुंधला हो रहा है सब कुछ,
मगर उस एक चेहरे को हमने, हमेशा हरा रक्खा है।

"राही" ये इश्क़ है या सरकारी नौकरी की थकान,
कि हमने जीने को भी इक मसला बना रक्खा है।

उम्र भर

मिले बग़ैर उसे ही उम्र भर जिया जाए,
ये ज़हर हँस के सरे-आम ही पिया जाए।

न लम्स की है तमन्ना, न दीद की ख़्वाहिश है,
बस एक अक्स को आँखों में सी लिया जाए।

वो बेरुख़ी से मेरी सम्त देख लेती है,
नसीब है कि जिसे ज़ख़्म भी दिया जाए।

तअल्लुक़ात का मरना भी एक चमत्कार है,
कि दूर रह के भी उस शख़्स को जिया जाए।

वो मेरा नाम भी शायद भुला देगी किसी वक्त में,
मगर ये तय है, मेरे जुबान पे उसी का नाम लिया जाए।

शरीर की सीमा से बाहर का इश्क़ है " राही ",
क्यों ना उसे मिले बिना ही, उस पर मर मिटा जाए।

बिना तुम्हारे

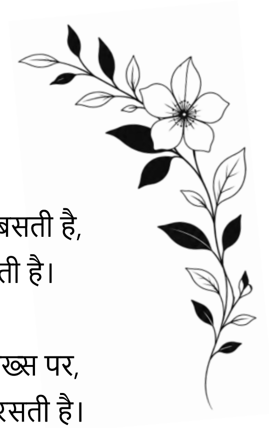

क्यों बिना नफा नुकसान देखे, वो रूह में मेरे बसती है,
आखिर ये एकतरफ़ा मोहब्बत भी कितनी सस्ती है।

मिले बग़ैर ही सब कुछ लुटा दिया उस इक शख्स पर,
अजीब शहर है, चाहत जहाँ उस शख्स को तरसती है।

वो झिड़कियाँ, वो हिक़ारत, वो उसका ग़ुस्सा भी,
मेरे लिए तो वही धूप, वही छांव, वही मस्ती है।

गुलाब को कहा ही होता है खबर, कांटों का उसके,
फूलों केलिए तो, कांटों की यही एक मात्र हस्ती है।

बेशक हज़ार बार किया उसने नज़र-अंदाज़ हमें,
मगर ये आँखें भी, उसी मोड़ पर हजार बार ठहरती है।

बिना तुम्हारे ही तुमको रचा है यादों में "याना",
बिना तुम्हारे ये दुनिया "राही" को उजाड़ लगती है।

सवाल भी !!

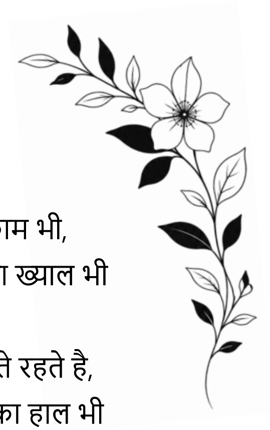

खैरत है गर्मी है, पंखा चलता रहता है, बिना काम भी,
तकल्लुफ होगी सर्द में, गर्दन को हुआ पंखे का ख्याल भी

वो खुदको अपने चाहत की कश्मकश में मारते रहते है,
कहा ही वो कभी पूछते है, अपने चाहनेवालों का हाल भी

अना आजमाते है जो, अपने आशिकों पे, ना आजमाय,
इक अना भी जवानी का, गुजार देगा बुढ़ापे का साल भी

उनका अगर ज़िक्र ना करूं तो सांस अटकने लगती है,
वो थी ही कुछ ऐसी —मानो ज़हर भी, कमाल भी।

जनवरी में वो, एक बार देख कर चली गई थी छत से,
उसी ठंड में ले गई वो मेरा वजूद, और मेरा जमाल भी।

माना वो अपनी मर्जी से चुप थी, मगर मै कह सकता था,
बस सुनने के लिए चाहिए था उन्हें, थोड़ा सा मलाल भी।

अक्सर अब जब लोग पूछ लेते है — “कौन थी वो?”,
"राही" हँस कर हमेशा — टाल जाता है सवाल भी।

मेरी जान

मर जाऊँगा मैं कभी तेरे ही इंतज़ार में शायद,
कोई और दिखे भी तो, नहीं होगा मुझे करार, मेरी जान।

अब तो मेरी खामोशियाँ भी बोल उठती है मुझसे,
मेरा चेहरा अब भी करता है, तुझसे इज़हार मेरी जान।

तेरे बाद मै आईने से भी डरने लगा हूँ अब,
हर शक्ल में दिखता है मुझे, तेरा ही पैग़ाम, मेरी जान।

तू कभी पूछ ले मुझसे की — "तू अब भी वही है क्या?",
तो इसका मैं खुद भी, नहीं लूंगा कोई इल्ज़ाम, मेरी जान।

अब कोई भी जख़्म नहीं देता तकलीफ़ मुझको,
तू जबसे गया — दर्द भी हो गया है मुझे आम, मेरी जान।

मैं तन्हा नहीं हूँ, मगर तन्हाई ठीक वैसी ही है अब भी,
जैसे खड़ी हो तू अब भी दीवार के पार — मेरी जान।

वो रातें जो तेरे ख़्वाबों से भरी होती थीं अब तक,
अब लगती हैं मुझे, कोई सुनसान बाज़ार — मेरी जान।

मर जाऊँगा मैं कभी तेरे ही इंतज़ार में शायद,
कोई और दिखे भी तो, नहीं होगा मुझे करार, मेरी जान।

डरते है ख्याल

डरते है ख्याल अब हमारे, गूफ्तगू से उनके,
ना जाने कब, किस बात पे मुकदमा लगे।।

हमारे अल्फाज़, जब उन्हें दुख दे रहे थे तब,
क्यों नहीं जुबान पे हमारे, आबले लगे।।

हमने मुरझाया है, अपनी उस इक कली को,
जिसके मुरझाने से, कांटों को भी सदमा लगे।।

कल रात कत्ल हुआ है हमसे, उनके भरोसे का,
सज़ा-ए-तौर हमें भी, किसी बेवफ़ा की सज़ा लगे।।

हमारे लहज़े जो चोट दे गई, उनके जज़्बात को,
वो सारे चोट हमें लग जाएं, फिर ना दबा, ना दुआ लगे।।

उनके रूखसार पे जो शिकन आई है, हमारी वज़ह से,
वो सारे शिकन हमें मिले, ऐसी हमें बद्दुआ लगे।।

अंजाने में हमारी वज़ह से, जो दिखी है उदासी उनमें,
क्यों ना ये देखने से पहले, हम खुदको अंधा लगे।।

अगर अंजाने में भी हमसे, दिल दुख जाए उनका कभी,
दिल करें के, "राही" को सीधा दिल का दौरा लगे।।

तेरे जाने के बाद

सिगरेटें अब इतने शौक़ से जली हैं,
गले में अब वो पहली सी हवा नहीं हैं।

शराब ने भी एक दिन हार मान ली,
तेरे बिना अब नशे में मज़ा नहीं हैं।

तेरी हँसी के बाद जब से चुप हुआ हूँ मैं,
मेरे अंदर अब कोई और शोर बचा नहीं हैं।

नींदें भी अब सवाल करने लग गईं,
तू नहीं तो कौन ही कहे अब — "क्या तू थका नहीं हैं"?

गाल धुएँ से जले, होंठ स्याह पड़ गए,
तेरे गालों सा अब कुछ भी नर्म रहा नहीं हैं।

ख़ुद से बातें करने की लत सी लग गई है मुझे,
अब कोई सामने हो — तो भी कुछ कहा नहीं हैं।

भूख भी अब सिर्फ़ यादों पर टिकी है,
तेरे जाने के बाद से कुछ चखा नहीं हैं।

'राही' जाने क्यों अब हर शय में सिर्फ तुझको ढूंढता है,
तेरे बाद कोई चेहरा, उसके लिए वो चेहरा नहीं हैं।

ज़िंदगी

भले हवाएं सहला रही हैं, मेरे बालों को...
मगर वो छुअन अब भी तेरा इंतज़ार लगती है।

मैं इस कदर डूब गया हूं तेरे एहसासो में...
तेरी हर ख़ामोशी भी इकरार लगती है।

खुली खिड़की से छनती, उषा की किरण...
अब तेरी यादों का फुंसा जाल लगती है।

तू पास नहीं, मगर तुझसे दूर भी नहीं हूं...
तेरी हर कमी भी मुझे, तेरा ही ख्याल लगती है।

नींद भी अब तेरे नाम पर हक़ जताती है मुझसे...
हर सपना तेरी ही तलाश में बेहाल लगती है।

लबों पर तेरा नाम लाना मना है अब... तेरे खातिर
अब इस दिल की धड़कन भी गुनाह-ए-ख़्याल लगती है।

और तू जो नहीं है — वही सबसे बड़ी बात है..."राही"
तेरे बिना अब ज़िंदगी भी महज एक मलाल लगती है।

कमरा गवाह है

कमरा वही है — मगर हर साँस बेअसर लगने लगी है,
शख़्स है यादों में, दीवार हर साया चबाने लगी है।।

पंखा नहीं चलता किसी गर्मी से अब,
वो बस अब गर्दन की ख़बरें उड़ाने लगी है।

बिस्तर पे बिखरी है वो चुप बगावत अब भी,
मेरी चादर मेरी ही धड़कनो को दबाने लगी है।

तकिया जो गवाह था हर नींद का मेरे,
अब करवटों पे भी शक़ फरमाने लगी है।

कुर्सी पे रखा जो वक़्त बचा था कभी,
अब हर बैठक से मुझे डराने लगी है।

आईना, जो खुद सा था, अब भी टंगा है,
पर आँखे मेरी आँखों से चुराने लगी है।

खिड़की जो हर रोज़ हवाओं को पढ़ती है,
वो अब तेरी चिट्ठियों सी फड़फड़ाने लगी है।

क़लम रखी है — पर कुछ नहीं है कहने को,
स्याही भी अब रगों में समाने लगी है।

किताबें भी अब मुझे, कोई इश्क़ नहीं बतातीं,
हर सफ्हा मुझे, मेरी लाश दिखाने लगी है।

रौशनी भी आती है, कुछ सोच समझ के मेरे कमरे में,
"राही" को फिज़ा का अंधेरा जो रास आने लगी है।

मुक़द्दर

हमें मुक़द्दर की भीड़ में छोड़ दिया गया
अब कोई और सँवर रहा है — तेरी हाथों से।

हमने ख्वाब बोए थे तेरी पलकों की ज़मीन में,
अब वही ख्वाब सज रहे हैं — तेरी बातों से।

तू जिसके साथ भी हो — दुआ है, खुश रहे,
हमने तो इश्क़ निभाया है — तेरी जज़्बातों से।

कोई और अब तुझमें अपने ख़ुदा को देखता होगा,
और हम अब भी जले जा रहे हैं — तेरी यादों से।

तेरे वक़्त का हक़दार कोई और बन गया,
और हम हर रोज़ कटते रहे — तन्हा रातों से।

हम वो नाम थे जो तेरी कहानी में मिटा दिए गए,
अब तेरा हर सफ़्हा महकता है — टूटे ख़्वाबों से।

"राही" अब तेरे हँसने में भी एक चुभन सी है,
क्योंकि वो किसी और की हो चुकी है — जज़्बातों से।

वो जो सामने था, मगर जैसे नहीं था

वो जो सामने था, मगर जैसे नहीं था,
मैं वही था — मगर शायद मैं भी नहीं था।

निगाहें मिलीं, पर ज़मीं काँपती रही,
ये इश्क़ था भी... मगर अपना नहीं था।

लबों से ख़ामोशी टपकती रही रात भर,
कहना तो चाहा... मगर कहना नहीं था।

लब चुप थे, साँसों में हलचल बसी हुई,
वो पास था भी... मगर छूना नहीं था।

मैं टूट कर भी उसी से बंधा रहा,
वो मेरा सब कुछ... मगर मेरा नहीं था।

मैं जलता रहा उसके चेहरे की रौशनी में,
वो चाँद था भी... मगर अपना नहीं था।

ख़्वाबों में जितना था, हक़ीक़त में कम निकला,
"राही" चाहता सब कुछ था... मगर मिलता नहीं था।

सब कुछ लुटा बैठा

तवज्जो की तो इक लम्हा भी कीमत ना रही,
मगर हम थे कि उसपे उम्र की बोली लगा बैठे।

वो आंखों में कभी ठहरा नहीं एक पल को भी,
हम ख़्वाबों में उसी का शहर बसा बैठे।

न मोहब्बत का सिला, न कोई वादा, न निशानी उनकी,
और हम, पलकों में उन्हें उम्र भर केलिए छुपा बैठे।

नफ़ा क्या था, ये तो आज तक मालूम ना हुआ हमे,
मगर इश्क़ में हम, हर सुकून का नुकसान करा बैठे।

वो पूछते नहीं, मगर हम हर बात उन्हीं से जोड़ते रहे,
ये कैसी चाहत रही, जहां हम उनसे खुदको गँवा बैठे।

ना उनको कोई फिक्र, ना कोई एहसास बाकी थी कभी,
हम ही थे जो उनकी ख़ामोशी को भी मतलब बना बैठे।

लाखों चेहरों में भी हम तन्हा ही रहे हर वक़्त,
उनकी चाहत में, हम अपना ही चेहरा मिटा बैठे।

इतना ही सबक़ बचा था, इस बर्बादी के सौदे में, राही'
उनके लिए हम कुछ न थे, और हम सब कुछ लुटा बैठा।

रिहाई

मैं ही पागल, मैं ही बुरा,
इश्क़ मेरा था ही अधूरा।
तुझे प्यार दिया या दर्द दिया?
तेरा हँसता सावन जर्द किया।

मेरी मौजूदगी तुझे खलती थी,
तेरी हर खुशी हाथ से फिसलती थी।
मैं साथ रहा तो बस रोई तू,
चैन से एक पल न सोई तू।

खुद को कोसता हूँ रात-दिन,
बेहतर है तू अब मेरे बिन।
मेरा जाना ही तेरा सुकून बने,
मेरी दूरी ही तेरा जुनून बने।

मैं साया बन कर डराता रहा,
बिन बात तुझे रुलाता रहा।
तूने जो मुझसे किनारा किया,
सच कहूँ तो मुझपे सहारा किया।

तेरी ख़ामोशी मेरी सज़ा बनी,
मेरी ही हस्ती तुझपे बला बनी।
मैं पत्थर था, तू शीशा थी,
मेरी हर चाहत शायद तमाशा थी।

तूने तो वफ़ा का मान रखा,
पर मैंने नहीं कोई तेरा ध्यान रखा।
इबादत के नाम पे ज़ुल्म किया,
तेरी सादगी को मैंने ख़त्म किया।

अब आँखें भी रोने से डरती हैं,
ये खुद की नज़रों में गिरती हैं।
मैं यादों में भी न आऊँ तेरे,
यही अब अरमान रह गए मेरे।

तेरी राह से खुद को हटा लिया,
मैंने अपना ही घर जला लिया।
तू दूर हुई तो साँस आई तुझे,
मेरी मौत ही शायद अब रास आए तुझे।

अब माफ़ी के भी क़ाबिल नहीं,
मैं प्यार के अब क़ाबिल नहीं।
मेरी याद का हर एक निशान हो घिसा,
तू अपनी हसीन इक दुनिया बसा।

कमी मेरी अब मरहम बने,
न आँखों में तेरी कभी ग़म बने।
जो सुकून तुझे मेरी बातों में न मिले,
वो अब तुझे तन्हाई की सौगातों में मिले।

मै उसे लिखता हूं

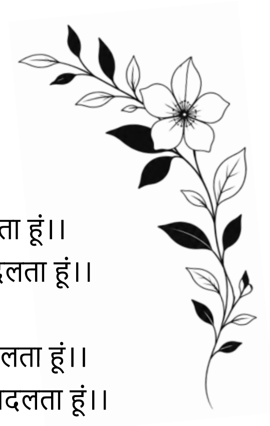

करवटें बदल जाते हैं, कभी बिस्तर नहीं बदलता हूं।।
सपने बदलते हैं मेरे, सपनों का शख़्स नहीं बदलता हूं।।

ख़्वाब रोज़ बदल जाते है, मगर मंज़र नहीं बदलता हूं।।
किस्से बदलते हैं, कभी भी हर्फ़-ए-हक़ नहीं बदलता हूं।।

अना छोर आया हूं, अब मै उनके सरकार में रहता हूं।।
गुमान बराबर है, मै उनके इश्क-ए-करोबार में रहता हूं।।

जुबां रख के लौटा हूं, अब मै उनके इकरार में रहता हूं।।
वो ख़ुदा से भी आगे हैं, मै उनके इख्तियार में रहता हूं।।

वो एक बेग़म है, बेग़म भी बलाओं की, उन्हें लिखता हूं।।
बला की अदा, अदा भी अप्सराओं सी, उन्हें लिखता हूं।।

वो एक आफ़त हैं, आफ़त दुआओं की, उन्हें लिखता हूं।।
नज़र की शराब, शराब सिफ़राओं सी, उन्हें लिखता हूं।।

वो सहरा-ए-ख़ामोशी हैं, उनमें भटकता हूं, और देखता हूं।
वो शाहील-ए-मोहब्बत हैं, उनमें बेहता हूं, और देखता हूं।

हक़ीक़त नहीं वो, उनके ख्वाब बुनता हु, और देखता हूं।।
वो दरिया-ए-दिल्लगी है, उनमें डूबता हु, और देखता हूं।।

तेरा होना झूठ था

तेरा होना झूठ था, मगर मान लिया,
दिल का टूटा शहर था... और सजा मान लिया।

तू किसी और की थी, मुझे मालूम भी था,
फिर भी तेरी चाह को — अपना ख़ुदा मान लिया।

तेरे बाद ही सही, इक सुकून मिल तो गया,
हिज्र के जंगल को मैंने दवा मान लिया।

अब न तेरी याद में ख़ुद को सज़ा देता हूँ,
तेरी ग़ैर मौजूदगी को... हमने गवाह मान लिया।

मोहब्बत की जंग मैं हारा ही नहीं हु "राही",
हमने तेरे इनकार को ही रज़ा मान लिया।

ताज्जुब

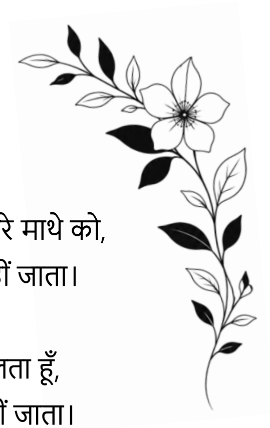

कोई हाथ फेरे मेरे पेशानी पर, कोई शाने दे मेरे माथे को,
मेरा सर-ए-दर्द नहीं जाता, ख्वाब-ए-भरम नहीं जाता।

वो बात करे तो नींद आए, उसकी चुप्पी में जलता हूँ,
इन रातों से सितम नहीं जाता, सीने से ग़म नहीं जाता।

मैं टूटा तो नहीं हूँ शायद, मगर अब ख़ुद से डरता हूँ,
ज़ख़्मों का मरहम नहीं जाता, पलकों का नम नहीं जाता।

बिस्तर से उठती है ख़ुशबू, चिलमन में उसकी आहट है,
फ़िज़ा से वो नहीं जाती, ज़ेहन से उसका वहम नहीं जाता

मैं उसको देखे बिना जी रहा हूँ 'राही', क्या ताज्जुब है,
आँखों में रौशनी नहीं जाती, तो इक अंधा मर नहीं जाता।

एक बात

1 बात है मन की, चलो तुम्हे सुनाता हूँ,
2 लफ़्ज़ों में नहीं, नज़रों से जताता हूँ।
3 पल लगे तुमपे मरने में,
4 कदम हमेशा चलूंगा, तुम्हारे साथ चलने में।
5 बजे उस शाम,
जहां सूरज और समंदर मिलते हैं — वहीं मिलना मुझको।
6 पहर थामना, बाकी पहर सीने से जकड़ना मुझको,
जहां जुगनू से आँखें मिलते है, रोज़ वहीं मिलना मुझको।
7 फेरो बाद, तुम्हारे संग हर मौसम को जीना है।
8 मौसमों की मोहब्बत के बाद, जब
9 बजे रात तुम्हारी नज़रों में थकान होगी,
"राही" एक दफा फिर तुमसे कहेगा,
1 बात है मन की, चलो तुम्हे सुनाता हूँ,
2 लफ़्ज़ों में नहीं, नज़रों से जताता हूँ।

इस साल

ख़्वाब की राख हुई, ज़हर का मंज़र देखा
हम ने इस साल मोहब्बत में मुक़द्दर देखा

थी जहाँ आस, वहाँ प्यास का सहरा निकला
हम ने हर मौज के पीछे ही समुंदर देखा

याद जो थी, वो फ़क़त गर्द-ए-सफ़र ठहरी है
आईना तोड़ के हमने अपना ही पैकर देखा

उसका ख्याल वो है कि जो सीने में धुआँ करती है
हमने ज़िंदा रहने के लिये ख़ुद ही मरकर देखा

इश्क़ इक दर्स है, अब जान गए हम भी मगर
दिल की मिट्टी को जहाँ फूल था, वहां पत्थर देखा

कल जो पहलू में थे, अब रूह की दूरी पर हैं
ख्वाब में हाथ फैलाया भी तो बस ख़ाली बिस्तर देखा

मेरे हर उम्मीद की लकीर 'अलविदा' तक पहुँची "राही"
कमबख्त हमने इस साल हर मोड़ पे महशर देखा

अब के साल

गये साल का मलाल अब के साल पर है,
एक अजब सी थकान मेरे हाल पर है।

वही तिश्नगी है, वही रास्ते की धूल,
ज़माना क्यों इतने जश्न-ओ-ताल पर है?

किसे फ़िक्र है कि मेरे दिल पे क्या गुज़री,
सब की नज़र तो माह-ओ-साल पर है।

मैं अपने बिखरे हुए राख का तमाशा हूँ,
ये कैसा तंज़ मेरी क़िस्मत-ए-मिसाल पर है?

नए दिनों की चमक उनको मुबारक हो,
मेरा भरोसा तो वही अपने ज़वाल पर है।

उजाड़ बस्तियों में नया साल क्या लाएगा??
एक और ज़ख़्म नया, मेरे ख़याल पर है।

जो हमसफ़र थे वही रास्ता बदल गए,
अब एतबार किसे यहाँ किसी की ढाल पर है?

हवा-ए-वक़्त ने चेहरे बदल दिए सब के,
मगर एक पुराना निशान मेरे रूमाल पर है।

अब नए साल से "राही" क्या उम्मीद रखें,
जब हर सवाल का रद-ए-अमल सवाल पर है।

एक सब्र के बाद

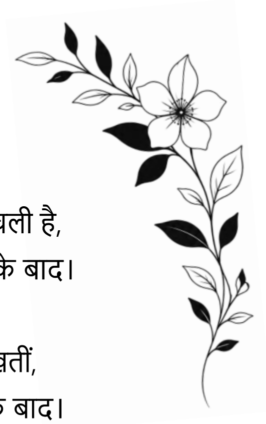

दीवार पर टंगी वो आख़िरी तारीख़ धुंधली हो चली है,
शायद फिर से कोई मौसम लौटे — एक सब्र के बाद।

उसके गाँव की गलियाँ अब नक्शों में नहीं दिखतीं,
शायद खुद ही रास्ता बन जाऊँ — एक सब्र के बाद।

वो किताब अब भी खुली है वहाँ, जहाँ उसने छोड़ा है,
शायद अगला सफ़ा उसी का हो — एक सब्र के बाद।

चाय अभी से दो कपों में बनती है, मेरे आँगन में
शायद उसका हाथ भी बढ़ जाए — एक सब्र के बाद।

छत पर टंगी उस पतंग की डोर अब भी उलझी है,
शायद कोई हाथ फिर से खींचे उसे — एक सब्र के बाद।

वो बारिशें जो भिगाए बिना लौट गई हमें हर दिन,
शायद कभी हमारा नाम पुकारे — एक सब्र के बाद।

आईने में जो शक्ल दिखती है कुछ अलग सी लगती है,
शायद वो मेरी नहीं, मेरी चाहत हो — एक सब्र के बाद।

अभी अधूरी है ये दुआ भी, ये चाह भी, ये राह भी,
शायद मुकम्मल वही हो जाए — एक सब्र के बाद।

"राही", कुछ राहें मुक़द्दर से नहीं, सब्र से खुलती हैं,
शायद मेरी भी वही हो — एक सब्र के बाद।

आशिकी भी नहीं की

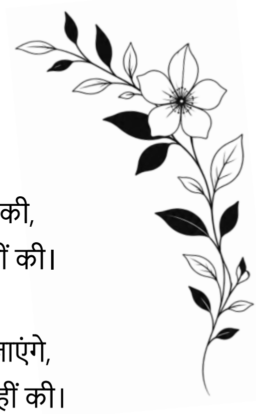

कोई वास्ता नहीं रखा उसने, दिल्लगी भी नहीं की,
हमारी दोस्ती ठुकरा दी, और आशिकी भी नहीं की।

उन्हें एक यकीं भी था कि हम खुद ही संभल जाएंगे,
इसलिए उसने हाथ थाम के ज़रा रहबरी भी नहीं की।

अजीब लोग थे वो, जो ज़ख्म दे के चलते बने,
बस मलाल ये है कि फिर ख़बर-गिरी भी नहीं की।

हां उसने वादा नहीं किया, साथ-साथ जीने का,
और ये आलम भी रहा कि, हम-सफ़री भी नहीं की।

वो चाहते तो कोई रास्ता निकल आता जरूर,
मगर अफ़सोस कि उन्होंने कभी कोशिश भी नहीं की।

तमाम उम्र जिसे ढूँढते रह गए 'राही' अपने राह में,
कमबख्त उस एक शख़्स ने खुद-सरी भी नहीं की।

रस्ते से

ख़याल, ख़्वाब, दरीचे, हवा के रस्ते से
मिले हो तुम हमें हर एक अता के रस्ते से

दरवाज़ा खोल के बैठा रहा हु मैं उम्र तमाम
तुम आए भी तो मगर बस दुआ के रस्ते से

तसव्वुरों की मुनादी तो मुस्तक़िल है मगर
कमी रही है बस इक इब्तिदा के रस्ते से

वही चराग़ जो दरवाज़ों पर सजाए थे
बुझा दिए गए ज़ालिम कज़ा के रस्ते से

तमाम उम्र सफ़र में ही कट गई 'राही'
न तुम मिले हमें सिदक़-ओ-सफ़ा के रस्ते से

अजीब ज़िद है कि हर राह से गुज़रते हो
परहेज तुम को है बस इक वफ़ा के रस्ते से

अता: देन / तोहफ़ा
मुनादी: घोषणा / पुकार
मुस्तक़िल: स्थायी (Permanent)
इब्तिदा: शुरुआत
कज़ा: मौत / भाग्य
सिदक़-ओ-सफ़ा: सच्चाई और पाकीज़गी

मैं गुज़रता हूँ

वो अब भी किसी और में डूबी है,
मैं फिर भी उसी में डूबता हूं, और गुज़रता हूँ।

हर शाम वो वही एक नाम दोहराती है,
मैं हंसकर सुनता हूं, और गुज़रता हूँ।

उसकी तन्हा आंखें, अक्सर कहती हैं कुछ मुझसे,
मैं बिन पूछे उन्हें पढ़ता हूं, और गुज़रता हूँ।

एक मुद्दत में,कभी चाहा था उसने किसी और को,
मैं उसी याद से जलता हूं, और गुज़रता हूँ।

वो हर जवाब जानते में भी चुप रहती है,
मैं हर एक सवाल करता हूं, और गुज़रता हूँ।

इक अर्से से, वो जख़्मों को खुद ही पाल रही है,
मैं ज़ख्म पलते देखता हूं, और गुज़रता हूँ।

इस इश्क में, इज़हार भी मेरा मुमकिन नहीं,
मैं हर एहसास संभालता हूं, और गुज़रता हूँ।

वो कहने को कहती है, --- “तू अच्छा है बहुत”, "राही"
मैं उसके जुमले में मरता हूं, और गुज़रता हूँ।

"याना" तुम भूल जाना

कि एक लड़का था अल्हड़ सा,
जिसने सालों बाद, आधे मार्च की उस सांवली शाम
तुम्हे एक तस्वीर में देख लिया था —
मानो मेरे दिल के कोने में किसी ने,
कोई दीपक जला दिया था।

भूल जाना,
कि जनवरी की उस ठंडी ठंडी इग्यारबी सुबह
बस छत पर तेरे होने से,
मेरी धड़कनों ने मुझे,
पहली बार सच में जीना सीखा दिया था।

भूल जाना,
कि मैं बेशक तुझसे कभी नहीं मिला,
मग़र मैं तेरे हर रंग में शामिल था,
अपनी पूरी उम्र का मौसम — मैं तेरे संग सी लेता था।
तेरे बिना भी मैं तुझको, खुदमें ही जी लेता था।

भूल जाना,
कि कभी एक लड़का था, बेख़बर सा
जिसकी आँखों में, अब भी
तू बसा करती है, एक शहर सा

भूल जाना,
कि भीड़ में रहते हुए भी,

मै तन्हा-सा चलता था
भूल जाना,
कि मेरे दिल का दरवाज़ा,
सिर्फ बस तेरे आहट से खुलता था

भूल जाना,
कि सर्द गलियों में होते हुए,
मै तेरे खयालों के शोर में गुज़रता था
भूल जाना,
कि मै अपनी जरूरतें भूलने वाला लड़का,
तेरे हर ज़र्रे- जर्रे को, मुहजवानी याद रखा करता था।

भूल जाना,
कि पागल था मै
जो खुद की यादों से ही हार गया था
तेरे हर रंग में, इतना रंगा
कि मैं अपना जवानी बिगाड़ गया था

भूल जाना,
कि "उषा" ने अपना,एक किरण खो दिया था,
भूल जाना,
कि "पंकज" ने अपना, एक तना तोड़ लिया था,
भूल जाना,
कि एक "अज्ञात" ने अपना, "राही"
तुम्हारे राह में छोड़ दिया था।
"याना" तुम भूल जाना।

आखिरी खत

तेरा पता, तेरी याद, एहसास, तेरा दीदार,
अब मेरी रातें नहीं पूछेंगी....
तेरा बदन, तेरी आँखें, जुल्फें, तेरा अधर,
अब मेरी कलम, किताबें नहीं पूछेंगी....

अबके अगर मैं गया, तो खुद लौट नहीं आऊंगा...
अबके दिल रोया भी, तो तुझे नहीं बताऊंगा...
इस जुदाई का, तुझसे अब कोई सबब नहीं होगा,
अपनी पिंदार-ए-इश्क का कोई भरम नहीं होगा..

आखरी गुफ्तगू में, तेरा इंकार दिखा है,
इस इंकार में, मेरा इंतज़ार छुपा होगा...
माना हमारा मिलना, एक इत्तेफाक रहा महज,
पर तेरा होना, भी मेरा आखरी आस रहा होगा....

तेरे दर पे, अब मैं फिर दस्तक नहीं दूंगा,
अब अगर तू बुलाये, तो ही ये दिल हाज़िर होगा...
इब्तिदा मेरी थी, मोहब्बत की तुझसे,
मगर मोहब्बत का मेरे, अब इंतहा होगा ..

बता दिया हमने, सारा राज़-ए-दिल अपना,
अब तुम जानो, और तुम्हारे दिल की वफा जाने...
"राही" मिलेगा सफर में, तेरी राह तकता,
अब तुम जानो, और तुम्हारा खुदा जाने...